



# उसका सपना

कमल मेवाड़ी की कहानिया

मूल्य                      तीस रुपये                      प्रथम संस्करण 1990  
प्रकाशक                      सम्बोधन प्रकाशन, काकरोली 313 324 (राज )  
मुद्रक                      मंगल मुद्रण, चेटक सकिल, उदयपुर 313 001 (राज )  
आवरण                      पारस दासोत

---

*USKA SAPNA* (Short Stories)

by Gamar Mewari

Rs 30 00

कवि एव कथाकार  
श्री मधुसूदन पाण्ड्या के लिए

## क्रम

- बदलते रिश्ते /9  
मुक्ति /14  
उनकी जीत /20  
इतने सारे सुख /25  
अलविदा जगल /31  
उसका सपना /36  
घातक /42  
सूरज फिर निकलेगा /49  
घु घ म फसे लोग /55  
नयी सुवह /60  
फमला /65  
पुत्तारिन /69  
एक जीनियम का अंत /75

## नयी सुबह का कवि-कहानीकार

कमर मेवाड़ी की कहानियाँ पढ़ते हुए यह याद करने की जरूरत न भी हो तब भी किसी न किसी तरह यह प्रगट होता है कि वे कवि हैं। मैंने उनकी ज्यादा कहानियाँ नहीं पढ़ी हैं लेकिन यह जानने की मेरी इच्छा रही है कि वे अपनी कहानियाँ को कविता से किस तरह और कितनी दूर रख पाते हैं। दरअसल मैं कविता और कहानी के बीच अंतर करता हूँ जो केवल विधा को या विस्तार को लेकर नहीं है जैसे यह कि किसी कविता को कुछ फँसा दें तो वह कहानी हो जायगी और कहानी को कुछ सिकुड़ जाने दें तो वहाँ कविता की सम्भावना नजर आन लगेगी। मेरी दृष्टि में यह अंतर दुनिया और मनुष्य को देखने में है। कवि जिस तरह दुनिया और मनुष्य को देखता है और उनके रिश्ते को तात्त्विक रूप से ग्रहण करता है कहानीकार उस तरह नहीं लेकिन आकाश में उड़ने वाली पतंग को जरा सी झंझर-उधर करते पूरे विस्तार में और हिलने डुलने के कौतुक में देखता है।

बहरहाल कमर ने इन कहानियों में जिन्दगी की पतंग को उड़ने के लिए छोड़ी तो है लेकिन पूरी तरह नहीं इसलिए कहानियाँ अपने आकार में न केवल छोटी रह गयी हैं बल्कि एक अनुभव के सपन होने के पहले ही सिमट जाती हैं।

कमर की ये कहानियाँ कम पेचीदा और कोताहल रहित हैं। उनमें व्यवस्था में संपर्प करते लाग जहाँ पहुँचते हैं वहाँ भी छोटे और नीचे नहीं होत और यद्यपि

वे किसी प्रकार की राजनीति  
उनका हार जाना, उनका  
बदलने की इच्छा जगता है

से प्रेरित उपदेश नहीं देते फिर भी उनकी जिन्दगी,  
गलपन या किसी की हत्या कर देना हम में दुनिया

'सूरज फिर निकलेगा' की सु  
अपने बीमार घेठ शकर के स  
की जान बचती नजर नहीं  
है। दिन में तो सेठ उस दु  
उस के घर पहुच जाता है,

खिया एक मामूली स्त्री है। अकाल के दिनों में वह  
थ किसी तरह दिन काटती है। किन्तु जब शकर  
गती तब वह हार कर सेठ के पास पैसे भागने जाती  
स्कार देता है लेकिन साभ होते होते वह रुपये लेकर  
हा सुखिया के साथ उसका यह सवाद होता है—

'सठ यहा क्या आए हो ?'  
'रुपया देन।' सेठ ने जवाब  
'दिन के उजाले में क्या साप  
'रात के अंधरे में इसलिए

सुखिया ने बिना सहमे हुए पूछा।  
दिया।  
सू ध गया था जो अब रात के अंधेरे में आए हो ?'  
गाया है कि बदले में तुम से कुछ वसूल कर सकू ?'

एक गरीब औरत के पास स  
का तक है। सुखिया सठ व

सब कुछ छोड़ना जा सकता है यह 'महाजनी सभ्यता'  
हत्या कर के इस तक को उलट देती है।

इस कहानी की मूल संवदना  
ता यह कि हिन्दुस्तान में अमू  
कोट, बचहरी के एकट घग्हा  
में शूरता की यही एक अली व  
में स्त्री का मानना देने की हा  
कथ्य का गुनन से क्या कतराये

के साथ मेरी कोई तकल्लर नहीं है लेकिन एक बात  
मन स्त्रियां इतनी बहादुर नहीं होतीं और बाद में  
भीय होते हैं। दूसरी यह कि कत्ने की जिन्दगी  
हानीरार को नजर क्यों आए ? हमारी जिन्दगी  
रा गलियां आविष्ट हैं, उही में से हम अपने

हमारे धाम-धाम के दु ग और  
धु म फ म गाम। काठिया  
गुलदा का गपना है य-धुमा म  
गाता पूरा नहीं हाता। का  
गपना का नही नाता। कह

अपघात की दो और कहानियां हैं— उसका सपना,  
का गपना है जमीन और धुध में फने कू और  
पूरी से मुक्ति। दोनों कहानियों के पात्रों का  
नया पागत हा जाने की मन-मिथि में भी अपने  
है—

'गातव में ज-गी ही बागम भा  
घा मा का -रि र निरनी।

गा। मरा यह सपना पूरा हागा तथा कथ्या की

लेकिन बकू और तुलछा व्यवस्था के बड़ी साजिश के शिवार होते हैं। दरअसल बकू और तुलछा जैसे भोले भाले लोग एक पू जीवादी देश में कानून की लाचारी और अकमप्यता नहीं समझने।

मास्टरजी उन्हें 'बधुआ भजदूरो' की भुक्ति के समाचार सुनाते हैं और बकू-तुलछा इस भुक्ति के एहसास में पागल से हो जाते हैं। जब जमींदार का कारिदा बुलाने आता है तो तुलछा कहता है 'मैं नहीं आता। कह देना ठाकुर से। अब मैं ठाकुर का गुलाम नहीं। अब मैं आजाद हूँ। सरकार ने पिछला सारा बज माफ कर दिया है। मास्टरजी अग्यवार में स पढकर सुना रहे थे।'

थोड़े दिनों बाद मास्टरजी का कत्ल कर दिया जाता है और उस हत्या की साजिश में तुलछा को तलाश करने पुलिस वाले घूमते हैं यद्यपि 'दक्षिण पट्टी के लोग अच्छी तरह से जानते थे कि मास्टर दयाराम का कातिल कान है, पर वे भयाक्रांत और मौन थे और भय के कारण पीपल के सूखे पत्तों की तरह वाप रहे थे।'

बकूर ने इस कहानी में हमारे जनतंत्र और 'याव' की वास्तविकता पर व्यंग किया है। एक पगु और निरीह कानून के अन्तगत कोई मुक्त नहीं होता। ठाकुर के लोग मास्टर का कत्ल कर देते हैं क्योंकि वह जनतंत्र की चेतना का मेहदण्ड है।

बकूर की एक और कहानी का जिक्र करना मरे लिए आवश्यक है। यह कहानी शहर की जिन्दगी से ऊबे हुए पति-पत्नी को हुआ अंत में एक दूसरे से मुक्त हो जाना चाहते हैं। वे हो भी जाते हैं।

सुबह जब परनी उठी, उसने चाय बनाकर मेज पर सजाई और पति की तरफ देखा तो वह देखती रह गयी।

पति का निर्जीव शरीर पलंग पर पड़ा था और पत्नी का चिढ़ानी हुई पास ही टुकड़ी पड़ी थी नींद की सोनिया की खानी शीशी।'

शहर के अनात्मिय हाते हुए रिश्ता की कई कहानियाँ हिंदी में लिखी गईं किन्तु यह अनुभव हमारे लिए पुस्तक से आया था। दरअसल भारत में महानगरीय या फलाव नहीं हुआ और न उस अर्थ में औद्योगिक विकास ही हुआ है जिसे 'निम्न नतीजा' में सिर्फ मान या खुदकशी नजर आती है।



इन कहानी में 'आत्म हत्या' का हादसा 'बोरियत' के कारण होता है लेकिन 'बोरियत' क्या ? बमर के मन में कुछ भी रहा होगा । मेरा एक अनुमान ऊपर दज है लेकिन मैं एक दूसरा और गम्भीर अनुमान भी लगा सकता हूँ । मैं अनुमान लगाता हूँ कि उनकी 'बोरियत' का कारण शायद जवान दरजी है क्योंकि यह पढ़ लिख कर बमाने लाने लग गई है ।

बमर उन राजाकारों में है जो हमारी गर बराबरी वाली व्यवस्था के सतरा और अतबिरोधा को जानते हैं इन कहानिया में वे कठके प्रसंग मौजूद हैं लेकिन उनकी पद-चाप धीमी है और मैं यह नहीं मानूँगा कि बमर मेवाडी के दुनिया बदलने का सपना आकाशवाण्या और हताशा में विलीन हो रहा है ।

उनकी कहानिया में बार बार 'नयी सुबह' का जिक्र आता है, वे दरअसल हैं भी 'नयी सुबह' के ही कवि कहानीकार ।

30, अहितापुरी  
उदयपुर

नद चतुर्वेदी

## बदलते रिश्ते

बम स्टॉप पर उतरते ही पूछा था ग्रीन काटेज के लिए। पूरा पता मालूम कर तब के बाद वह वहाँ से चल पड़ा और अब ग्रीन काटेज को सामने पाकर थाड़ा हिचकिचा उठा। न जाने अन्दर कौन-कौन लोग हों और वे क्या समझ बैठें। पर अपने भ घोड़ा साहस बटार वह अन्दर दाखिल हो गया है।

फाटक का पार कर सीढ़िया चढ़ता हुआ सीधा एक कमरे में पहुँच गया। लोहे के पलंग पर एक मोटा गद्दा साफ सुथरी धुली चादर, खूबमूरत तकिया, सफेद कपड़ा से ढंका जिस्म, दूध धुले सफेद बाल और झुरियों में से भावता एक प्यारा सा क्लीन शेव्ड चेहरा।

वह दस साल बाद पिताजी को देख रहा था। उसे देखते ही उनके चेहरे पर खुशी के गुलाब खिल उठे। वे उठन की कोशिश करने लगे पर उठने में असमर्थ। वह उनके नजदीक पहुँचा। फिर से उन्हें बिस्तर पर लिटा दिया और श्रद्धा से उनके चरण स्पश किए। उसके ऐसा करने पर वे आसुओं की बाढ़ को रोक नहीं पाए। उनका सम्पूर्ण चेहरा आसुओं से भीग गया। उसने अपना चेहरा दूसरी ओर फेर लिया। बेंत की एक कुर्सी खींचकर बैठ गया और बात का रुख बदलने के लिए पूछ बठा— 'अब आपका स्वास्थ्य क्या है?'

‘अच्छा हूँ व तपात ने बोले ।

वह जानता है व अच्छे नहीं है । अगर वे अच्छे हात ता उम यहा आन की जरूरत ही क्या थी ? वह विचारा क तान बान जाडन लगा ।

कमर म मघाटा छा गया ।

लगा जम उमक आन के वक्त कमर म ता एक विशेष प्रकार की खुशबू फनी टुट गी उमकी जगह उदामी आर मनदृमियत न ल ली है ।

पिताजी शायद यह सब भाप गग आर कमर का घुटन स उवारन क लिए घडी म समय देगन गग । फिर बुद्ध भाच कर वान-

‘गामेश दखा समय हा गया । गमाचार ग्रा रह होंग ।

उमन टी वी चालू कर लिया ।

टी वी जा हमणा मुक की खुशहाली आर तरक्की क गीत गाता है आज आग उगल रहा था । अहमदाबाद म दगा हा गया है । वहा किमी एक वग के लागे क जुलूम पर दूसरे वग के लागे न पत्थर फेंके आर दगा भडक उठा । दग की आग म क्या हिन्दू आर क्या मुसलमान सभी भेट चट रह ह ।

उसन साचा एसा क्या हा रहा है । एसा क्यों हाता है ? एक ही मुल्क म रहन वाने लाग, जा आपस म भाई भाई ह अलग अलग मजहब का मानत हुए भी जिनकी रगो म एक ही तरह का गून बहता है, एक दूसरे के दुश्मन बनकर आपस ही खून क प्याम हो गए ह ।

साबत साबत उमकी निगाह पिताजी की आर उठ गई । उसे लगा पिताजी की आंखो मे फिर कोई सलाब उमडन वाला है । उस भूनी बिसरी वह बात याद आ गई जब दिल्ली म एसा ही एक भयानक दगा हुआ था और उमकी मा उम दग की भेंट चढ़ गई । मा याद आत हा उसकी आंखो स भी आसुआ की बूट टपक पड़ी । उसन टी वी को एक भटके क साथ बंद कर लिया ।

उमकी निगाह दीवार पर टगी तर तम्बीर पर अटक गई, जिसम पिताजी आर मा आपस लिनी वान मरान क तानन म कृमिया पर बठे चाय पी रह है

आर सामने मेज पर एक न्यूनरत टी मेट रना ह । इम मवान के साथ उसको भी कई यादें जुडी हैं । उसन अपनी जिन्दगी की बीम बहतरिन बहारें यहा गुजारी थी । पर अब य मव अतीत की बातें ह, जिन्हें साद करने से सुग नहीं मिलता सिफ वनजे पर चाट गती ह । उन जिना जय उन मा के स्वगवाम का तार मिना था तब वह बहुत रोया था । उस इम बात का भी बडा मदमा रहा कि वह घर स इतना दूर हान के कारण मा के अन्तिम दशन तब नहीं कर सका । उम वक्त उमे उन तमाम स्वार्थी नताग पर बडा गुस्सा आया था जो देश की अगिहित आर भारी भाली जनता का भडका कर दग करवात है ।

वह मोचता था उसका वश चले ता वह एस नागा को जा मुन्क को नस्तनाबूद करन पर तुने हुए हैं एक नाइन म गडा करके गानी मार दे । पर वह जानता था वह एमा नहीं कर सकता ।

मुवह जय वह उठा ता धूप के चकत कमर म बिछे हुए थे और ठडी ठडी हवा बिडकी क रास्ते अन्दर आ रही थी । उसे पिताजी क कमर म किसी स्त्री के बातचीत करने की आवाज कान म पडी । वह नाइट सूट पहने हुए ही पिताजी के कमरे म जा पट्टा । देखा पिताजी तन्विय का महारा लिए बटे हुए हैं आर सामन गहुए रग की अच्छे नाक नक्श वाली एक अबड महिला कुर्सी पर बैठी उनसे बात करने म तल्लीन ह ।

वह क्षण भर म ही मारी स्थिति ममभ गया । उम देस पिताजी वाल उठे, 'आओ मोमेश इनसे मिलो, य रेहाना बगम ह । तुम्हारी मा के स्वगवाम के बाद से ये ही मेरी देग भाल कर रही हैं । यह मवान भी इही का ह ।' पिताजी ने ज्याही बात गत्म की, उसने भुव कर चरग स्पश किए तो वह आशीवादी मुद्रा मे वाली, 'जीते रहा वेटा ।' फिर कुछ क्षण मौन छाया रहा ।

दवा का वक्त हा चुरा था । उसन पिताजी को दवा पिलायी और गहर निकलने को मुडा ही था कि वह वाल उठी- 'मोमेश कहा चन दिये ?'

'जी मैं जरा नहा लू, फिर तयारी भी करती हूँ ।'

'कहा की तयारी ?'

'आज शाम के प्नेन से जाना चाहूंगा ।'

'इतनी जल्दी ? दस साल बाद अपन पिताजी मे मिने हा, क्या इनके साथ कुछ दिन गुजराने को जी नहीं चाहता ?'

'जी तो बहुत चाहता है, पर मजदूरी है।'

'ऐसी क्या मजदूरी है?'

'मुझे बल ही जाइन करना है।'

'सृष्टियां बढवायी जा सकती हैं?'

'वह नामुमकिन है।'

'फिर मुमकिन क्या है?'

'मरा जाना।' वह मुस्कराया।

'अगर आज तुम्हारी मा होती तो क्या तुम इस तरह चले जाते?'

वह चुप हो गया। उसके पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं था।

पिताजी चुप, लगातार श्रम में घूर चले जा रहे थे। उनके चेहरे पर उलामी और बेचारागी के चिह्न भलक आए। वह इस मारी बातचीत से अपने का अब तक असम्भूत रमे हुए थे। वह वहां से चुपचाप गिमेक लिया।

वाथरूम से निकल कर कपडे पहने और एक एक कर मारा मामान सूटकेम में जमाने लगा। फिर खाने की मज पर जा पहुचा। पिताजी, जो पहले से ही गम्भीर बने बडे थे, उन्होंने चेहरे पर झुंठी मुस्कान बिखर ली। खाने के समय कोई कुछ नहीं बोला। पिताजी और देहाना वेगम अपने अपने गमगीन चेहर लिए किसी सोच के समन्दर में डुबकिया लगा रहे थे। उस लगा जम व दाना सिफ उनका साथ भर दे रहे है, कुछ खा पी नहीं रहे। इस एहसास के जगत ही उसका भी जी खान से उचट गया और वह वहां से उठ खडा हुआ।

वाशवेसिन पर हाथ मुह साफ कर लने के बाद अपने कमरे में जाकर पलंग पर बिछ गया। कई प्रकार के विचार मस्तिष्क में उथल पुथल मचाते रहे पर दिशा नहीं मिली। सिफ काल पीले दायर दिखाई देते रहे। महसूस हाता था वह इन दायरा के बीच फस गया है और इनस बाहर निकलन का कोई रास्ता नहीं है।

अनायास टेवसी के हान की आवाज सुनकर उसके विचार तनु टूट गए। सूटकेम के हैडिल का उसकी हथेली में मजबूती से जकड लिया।

याडी ही देर में वह पिताजी के सामने खडा उनस अन्तिम बिना ल रहा था। देख रहा था पिताजी उससे आखें मिलान से भी कतरा रहे हैं। उनके चेहर पर विवशता तथा इकलौत बडे के खो जान के भाव स्पष्ट रूप में अंकित हैं। वे कुछ नहीं बोल सिफ उनका दाया हाथ ऊपर उठा और वह नमी का अलविदा समझ

कर बाहर की ओर मुड़ गया। तभी रेहाना बेगम उसके सामने जमीन पर गिर पड़ी। वह हतप्रभ सा उनकी ओर एक टक देगता रह गया। उनकी आंखों में आसुआ आ सलाव उमड आया। वे कुछ थोलना चाह रही थी पर उनका गला रुध गया। फिर वे अटक अटक कर सिसकियों के बीच जो कुछ बोली, उसमें से वह कवल इतना ही सुन पाया- 'सामेश बेटा मुझ से कोई गुनाह हो गया हा तो उमें माफ कर देना।

उस स्वप्न में भी इस बात की उम्मीद नहीं थी कि जाने के वक्त उसे इतना त्रयनीय हाना पडेगा। उनकी अपनी आंखों में भी आसू तर आए, पर किसी न किमी तरह वह उह रोके रहा। उसने रेहाना बेगम को जमीन से उठाया और अपनी उगली से उनके आम् पौछ डाले। फिर बारी बारी से थड्डा के साथ दोना के कदमा में भुक् गया और कमर से बाहर निकल आया।

टैक्सी में उतर कर जब प्लेन पर सवार हुआ तो वह हटका हो चुका था। उमें इस बात की खुशी थी कि उसके माता पिता दोना जिन्दा ह और वह उनसे मिल कर अपने नियुक्ति स्थान पर जा रहा ह। प्लेन में बडे बडे ही उसने प्लान उनाया कि अब की बार जब दीवाली की छुट्टिया होगी तब वह अपने माता पिता के पास अधिक दिन रुकेगा। उसने सूटकेस खोला, उमें से नए साल की डायरी निकाली और गिनन लगा कि दीवाली की छुट्टियों में अब कितने दिन शेष ह।

□

## मुक्ति

मे आपको उनका नाम नहीं बताऊंगा वस आजकल नाम में रखा ही क्या है ।  
वे दोनों कई सालों से मोस्त थे पर उनके बीच पिछले एक साल में पति पत्नी का  
सम्बन्ध था ।

एक साल में ही वे एक दूसरे में इतना बोर हो गए थे कि दखत ही काटन में  
दोड़ते थे ।

पति की आय धीम मिनिट हो चुक थी । पर पत्नी अपने कमरे में डटी हुई थी ।

उन्होंने बूट के तम्बे खोले फिर माजे उतारे और कपड़े बदनकर पलंग पर पसर  
गये । उन्हें चाय की तलब जोरा में सता रही थी । पर उनके हाल जान पूछने  
वाला कमरे में बोर्ड नहीं था ।

वे पलंग पर पड़े-पड़े वसमसाते रहे और अपनी किस्मत का मातम मनाते रहे ।  
वे सोच रहे थे कि किस तरह उन्होंने इतना बड़ा जजाल पाव लिया । जब  
अकेले थे तो कितने मस्त थे । हर वक्त उनका चेहरा पर मुस्कराहट अठसनिया  
किया करती थी । और अब तालत यह हो गई है कि शीश में चेहरा दखते ही  
ता अपरिचय का एहसास घण्टा तक साजता रहता है ।

आगिर उहाने कौन सा कहर ता दिया था। मिफ इतना ही ता कहा था कि पढी लिखी हो आर मुद कमाती हा। इमका मतलब यह नही कि सामने वाले को कुछ भी नही समझा।

वम यही बात काट की तरह उमके मन म अटक कर रह गयी। सप्ताह भर से रानी जी का मिजाज मातके आमभान पर न। और उमके हर त्रियाकलाप से उपक्षा की उ उी उी फिर रही ह।

अब अगर वह पढी लिखी ह और कमाती है तो मैं क्या कहूँ। मैं तो उसकी कमाई म हिम्मा नही दगता। मन चाह जस उलजलूल खचें करती ह। नित नयी साडिया गरीज कर जाती ह। इननी साडिया ह उमके पास कि चाहे तो साडिया नी पर प्रदर्जनी आपाजित कर सकती ह। घर म रहेगी तब तक एक माट भाटे की साडी पहने रहगी पर जब बाहर निकलेगी ता ऐसा लगगा माना फशन कम्पोजीशन म हिम्मा लन जा रही ह।

पलग पर पडे पडे उनने मस्तिष्क म ऐम देरा विचार चकरघिन्नी छाते रहे और बे इन बड्डे मीठे विचारो के अधाह मागन म दुवकिया लगात रहे।

वे पलग मे इम सतवता मे उठे कि बिल्कुल आवाज न हा फिर दब पाव गलरी पाग कर पानी क कमर क गहर जा खडे हुए।

उहोने देगा पत्नी पदन म व्यस्त ह। वे चुपचाप बिना आहट किये पत्नी के पीछे जा गडे हुए।

पानी को पतर भी नही चला कि नई उमक कमरे मे आया ह।

उह तग आ गया। भयट कर किताब को फश पर फँक दिया।

पत्नी न सचबना कर उनकी नरफ दला। उनको आने बोध से फनफला रही थी।

—यह क्या हा रहा ह ? —हान पूछा।

—आपको नैय नही रहा। उमन जगग दिया।

—मैं क्या म आया हुआ ह ?

—मुझे नही मानूम।

—मानूम हागा हम। तुम्हें किताब ने फुसल मिग नब न।



—क्या मतलब है आपका, पढूँ नहीं ?

—मैंन कब मना किया ?

—तब फिर क्या बात है ?

—मैंन अभी तक चाय नहीं पी।

—ता मैं क्या करूँ ? आपने ही तो कहा था। चाय नहीं बनगी।

—हा, मैंने कहा था। पर क्या तुम नहीं जानती हा कि मैं चाय के बगर रह नहीं सकता।

—क्या शहर की भारी होटनें बन्द है ?

—तमीज से बात करो। उह फिर क्रोध आ गया।

—क्या, क्या मैं तुम्हारी कोई जर खरीद लौंडी हूँ ?

—कमाल कर रही हो यार ! अर बाबा तुम समझती क्या नहीं कि मुझे तुम्हारे हाथ से बनी चाय के बिना मजा आता ही नहीं।

—और किस बात के बिना मजा नहीं आता ?

—रहने भी दो। बात का बतगड मन बनाओ। चाय बनाकर पिलानी ह तो पिला दो।

—अच्छा बाबा पिलाती हूँ। अब चुप भी करा।

ज्योहा वह चाय बनाने के लिए उठी कि पति ने उसे बाहा म भर कर आममान की ओर उठा लिया। फिर गाल और हाठा का चुम्बन लेकर उमे सीन मे छिपकाया और जोर से भीच लिया। पत्नी के चेहरे पर अब मुस्कराहट पूट रही थी।

उसने पाच मिनिट मे चाय बनाकर टेबल पर सागा दी। पति न किताब उठाकर चाय पर ढक् ली और पत्नी की आग्ना मे कुछ टूडेन लगा।

पत्नी को फिर गुस्सा आ गया।

—क्या बात है चाय नहीं पीनी ?

—यह बात नहीं।

—फिर क्या बात ह ? चाय ठण्डी हो रही ह।

—मुझे नहीं पीनी तुम्हारी चाय बाय।

—यह भी कोई बात ह यार। तुम्हारी कोई बात मेरी समझ म नहीं आनी। अनी कह रहे थे चाय पीनी है। अब कह रह हो नहीं पीनी ह।

—हा हा मैं कह रहा हूँ। नहीं पीनी है।

—नहीं पीनी थी तो फिर बनवाई क्यों ?

—लो फेंक देता हूँ ।

—ए बाबू ! फेंकना मत । बड़ी अच्छी चाय बनी है । ले पी के तो देख ।

पत्नी चाय का मग पति के होठो तक ले जाती है । पति मुस्करा पडता है और चाय पीने लगता है ।

एक दो घूट चाय पीने के बाद पति के चेहरे पर उदासी की गहरी परत बिछ जाती है । और वह चाय का मग टेबल पर रख देता है । पत्नी उसके चेहरे की ओर देखती है ता पति की आंखो से आंसुओ की बड़ी बड़ी बूँदें टपकने लगती है । पति का पूरा चेहरा आंसुओ से नहाया हुआ लगता है ।

पत्नी पूछती है—

—अब क्या बात है ?

—कुछ नहीं यार ।

—कुछ है तो सही ।

—कुछ भी तो नहीं ।

—क्या बात है ? बताओ न ।

—सुनो, मुझे यह रात दिन की खट-पट अच्छी नहीं लगती ।

—कौन-सी खट पट ?

—यही तुम्हारा नाच नचाना । आसिर में भी आदमी हूँ यार । यह रोज रोज का नाटक मुझ मे नहीं खेला जाता ।

—तो मैं क्या करूँ ?

—सुनो ! हम दोनों पढ़े लिखे और इटलेक्चुअल हैं । हम आज कुछ न कुछ निणय कर लेना चाहिये ।

—चाय ठण्डी हो रही है । चाय पी लीजिए फिर निणय भी कर लेंगे ।

—नहीं, पहले निणय होगा ।

—कमाल करते हो यार । क्या मैं मरी जा रही हूँ ।

—तुम, क्यों मरो । तुम्हारी जगह ईश्वर मुझे मौत दे ।

—कुछ का कुछ बक देते हो । तुम्हें शम नहीं आती ।

—शम तो तुम्हें आनी चाहिये ।

—अब चुप भी करो । हर वक्त लेक्चर भाडते रहते हो ।

—मेरी भी कितनी अच्छी किस्मत है जो तुम से पाला पडा । देख लेना । एत दिन पछताओगे । हा, मच कह रही हूँ ।

—ज्यादा घमण्डी मत बना । मैं जानता हूँ कि तुम पढी लिगी और कमाऊ पत्नी हो । लोग ममभते हाने कि देगी ये कितन मस्त है । दोनों कमाते हैं

और दोनों खाते हैं। अगर कोई नजदीक आकर देखे तो पूरे जगह पर फफोले दिखाई देंगे। मेरी तो जिन्दगी ही तरह बनकर रह गयी है। ह भगवान! इस तरह की जिन्दगी से मुक्ति प्रदान कर।

—क्यों बिला बजह भगवान को कोम रह हा। जिस जीना नहीं आता वह तुम्हारी तरह भगवान से भरण की दुआएँ ही मागता है।

—अब बस भी करो। मुझे मान दा। नींद आ रही है।

दोनों पति-पत्नी अपने अपने पलंग पर लट कर नींद आने का अभिनय करते हैं। पर उन्हें नींद नहीं आती। पत्नी करवट बदलकर पति की तरफ मुह कर लेती है और बोलती है—

—क्या सो गप ?

—हुअ, नींद नहीं आ रही।

—सुना, एक बात कहूँ।

—कहाँ, क्या बात है।

पत्नी थोड़ा और पति के निकट विसक आयी। सोन स चिपक गयी। फिर बोली—

—एक बात कहूँ। अगर तुम्हें मज़ूर हो।

—कहाँ, मुझे सब मज़ूर है।

—देखो हम काफी दिनों से एकरम जिन्दगी जी रहे हैं। अब अच्छा नहीं लगता।

—तुम ठीक कहती हो। वास्तव में अब अच्छा नहीं लगता।

—तुम क्या सोचते हो ?

—तुम क्या सोचती हो ?

—क्या हम फिर से अलग नहीं हो सकें। मैं जहाँ चाहूँ जाऊँ। जहाँ चाहूँ रहूँ। तुम भी फिर से अपने कंधे पर जिन्दगी जीना शुरू करा। कुछ लिगो-पढी और अपना नाम रागन करा।

—आगर तुम कहना क्या चाहती हो ?

—तुम मुझे मुक्त कर दा। मुझे छोड़ दा। अब यह मर अच्छा नहीं लगता। अपने आप स पृथगा-भी हान लगती है।

—ठीक है, मुवट निणय करेंगे। अब सा जाया। नींद आ रही है। पति ने कहा और करवट बदल ली। पत्नी ने लाइट-ऑफ कर ली और वह ना सो गयी।

सुबह जब पत्नी उठी, उसने चाय बनाकर मेज पर सजाई और पति की तरफ  
देखा ता वह देखती ही रह गयी ।

पति का निर्जिव शरीर पलंग पर पड़ा था और पत्नी को चिढ़ाती हुई पास ही  
लुटकी पड़ी थी नींद की गोत्रियो की खाली शीशी ।



## उनकी जीत

सुबह जब कासिम बिस्तार से उठा तो उम लगा कि उसका पूरा बदन दद कर रहा ह। उसने मुह हाथ धाकर शीशे में अपना चेहरा देखा ता आ चय चकित रह गया। पीला-पीला सा मरियल और बीमार चेहरा देख कर वह सोच में पड गया कि ऐसा तो वह कभी नहीं था।

आज काम पर निकलने में पहन उसने चाय भी नहीं पी। एमा आज तन कभी नहीं हुआ। बिना चाय पिय वह घर में निकलता ही नहीं था। सकीना तडके जल्दी उठ जाती थी। फजर की नमाज अदा करन के बाद वह उसके लिए चाय बनाती। फिर रात की बची राटी और चाय का गिलास उसके सामन रख देती। वह कभी चाय के घूट के साथ राटी कुतरता। कभी ठण्डी राटी को मसल कर गम चाय में मिला एता और बड़े ठाठ के साथ चम्मच से खाता। इस सबमें उसे बड़ा मजा आता।

इस तरह कासिम की जिन्दगी गुजर रही थी। तकिन कुछ दिना में वह बहुत परेशान और खस्ता हाल था। सकीना कद जिना में बीमार चल रही थी। उमा हकीम साहब के एजाज में तकर गड-तादीज तब करवा लिय पर बीमारी दफा हान में बजाय बढ़ती ही चली जा रही थी। विद्यली रात का

वह हाजी पीर की दरगाह पर भी सक्तीना को जियारत के लिए ले गया था। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

आठ-दस दिन से तो सक्तीना की हालत बहुत ज्यादा खराब हो गई थी। वह निरंतर से उठ भी नहीं पा रही थी। कभी कभी तो वह तब से छटपटाने लग जाती। कासिम से उसकी यह हालत दायी नहीं जा रही थी।

उसके दोस्त किशन ने उसे अंग्रेजी दवाखान के डॉक्टर का दिखान की राय दी थी पर कासिम की मस्ता माली हालत उस अंग्रेजी दवाखान में बंदम रखने की इजाजत नहीं देती थी।

वह अपनी किम्मत पर बेचारगी के चार आसू टपका कर हटका हा जाता। कासिम की दिली ख्वाहिश थी कि वह सक्तीना का अंग्रेजी दवाखान के डॉक्टर को दिखाय। उसका बस चतता तो वह सक्तीना के इलाज में अपना सारा कुछ न्यौछावर कर देता। लेकिन अब कासिम के पास उसकी अकेली जान के अलावा कुछ भी तो शेष नहीं है। थाडा बहुत जो कुछ भी उसके पास था वह सक्तीना की बीमारी की भेंट चढ़ चुका था।

आज घर में भूजी भाग के लिए भी कुछ नहीं था। अगर उसका मालिक इलाही बरकत तीन महीने से पूरी मजदूरी नहीं दे रहा था। पगार के वक्त थोडा बहुत दे दिला कर उसे चलता करता। बीच में जब कभी वह उसमें मांग बैठता तो बड़ी चालाकी से बहाना बना कर टरका देता।

बेचारा कासिम मन मसोस कर रह जाता। सक्तीना की बीमारी ने कासिम का तोड़ दिया था। वह अन्दर ही अन्दर घुटता रहता। इन्हरे पदन का खूनसूरत कासिम बीमार और मरियल दिखाई देने लगा था। वह चिडचिडा और गुस्मल भी हो गया था। इलाही बरकत जसा फ़ावदार आदमी भी इन दिना उससे घबराने लगा था। कोई ऐसी बात होती तो भी वह उस टात जाता और हर भुमकिन कोशिश करता कि कासिम से उसका सामना न हो।

लेकिन कासिम ने आज अपने मन में तय कर लिया था कि वह अपनी मजदूरी के वाबत मालिक से जरूर बात करेगा।

कासिम के आत ही इनाही बरकत के दिन फिर गय थे। इलाही बरकत की खदान सफ़ेद माल की खदान न रह कर चादी की खदान में तब्दील हो गई थी।

इलाही वंश अपना बाप का जमा भी एक पुरानी साईंरिज पर बैठ कर मदान पर आना था। लेकिन अब वह माग्ति कार में उड़ता फिगता है।

यह मज कासिम के हाथों का काम था। कासिम का तो इलाह बदन का ताजगा, पर मजब का रिमाण था उमक पास। इलाही वंश पहनी नजर में ही भाष गया था कि आदमी काम का है और उमन उम रग लिया था।

इलाही वंश का मुग्द आश्चय हुआ था कि कासिम का हाथ उगत ही मदान में बड़े बड़े टर्कों निकलने लग था। आर इलाही वंश की मदान 'ए' थवालिटी का मावन के लिए पूर इलाके में मशहूर हो गई थी। जहां पहले एक टुक मान चार पाक हजार रुपय में बिकता था उतना ही माल अब पचास माठ हजार रुपयों में बिकने लगा। तभी तो इलाही वंश का हाथ से वह पुरानी साईंरिज छूट गई और उमकी जगह माग्ति कार में लगी। उहान अपने पुराने दहयनुमा घर को गिरा कर एक आलीशान इमारत में बदन दिया। जिममें मभी आधुनिक उपकरण मौजूद थे।

य अकमर चक्कर बीड़ी पिया करत था। अब उनके हाथों के बीच बीमती मिगार दबा रहता। गले चीकट कपडा की जगह अब ग्लादी के घबन वस्थ उनका शरीर की शाभा बढा रहे होत। ग्लादी का सफेद कपडा में ब किसी नता से कम नहीं लगत थे। घन की वृद्धि के साथ-साथ उनकी गण वृद्धि भी आसमान छूने लगी थी। कई बड़े बड़े नता उनके यहाँ महमान बनने लगे थे। गुजरे साल के मक्का की यात्रा भी कर आय। अब इलाही वंश हाजी इलाही वंश बन गये थे। इलाही वंश गमू तेली में राजा भोज बन गय थे। उनकी जिदगी में जबरन बदलाव आ गया था।

न बदला था तो कासिम और उसकी जिदगी। वही दुबला इलाह बदन का कासिम, किराये का घर, बीमार सकीना, अभावों और परेशानियों से जूझत दो इंसान। सकीना बिस्तर पर थी और कासिम उमकी तीमारदारी में दिन रात लगा रहता था, वह दौड़ दौड़ कर उसके लिए ताबीज गडे बनवाता, हकीम बख को दिखता। लेकिन सकीना की बीमारी ठीक होने का नाम ही नहीं ले रही थी। कासिम तित तिल कर आदर ही आदर जल रहा था। लेकिन अब कासिम आदर ही आदर नहीं जलेगा।

आज उमन पक्का इरादा कर लिया है। वह मालिक से जरूर बात करेगा। मालिक से नहीं बहेगा तो फिर किसको बहेगा अपना दिल की बात। एक अकेला

वासिम ही नहीं। मालिक का सभी मजदूरों के साथ एक ही व्यवहार है। वह कभी किसी को पूरी पगार नहीं देता। जब सत्र हाइला महानत करत है, तब पूरी पगार बयो, नहीं ?

आज पगार का दिन है।

11,402  
गाल

उसने सभी मजदूरों साधिया को इकट्ठा करके यह बात बता दी है कि वह आज मात्र म पूरी पगार देने और पिछला बकाया चुकाने की बात करेगा। सभी ने उनका साथ देने का वादा किया है।

वह मन ही मन साच रहा है। जब वह इस खदान पर आया था, तब मालिक के पास क्या था ? एक पुरानी टूटी साईकिल ! और आज ? आज मालिक के पास सब कुछ है और यह सब कुछ हम मजदूरों की बदालत है। लेकिन मालिक का मन हमारी गरीबी पर नहीं पसोखता। यहा तक कि वह हमारी मजदूरी भी पूरी नहीं चुकाता। शायद उस हमारे गरीब बने रहने में ही मजा आता है।

पारी खत्म हो चुकी है। सभी मजदूर मालिक की बठक की तरफ बढ़त है। वासिम भी उनके साथ हो जाता है, मुनीम सभी स हाजरी पर दस्तखत और अगूठा लगवा रहा है। मालिक भी सामने बठा है। आज मालिक अच्छे मूड में है। सबसे पहले वासिम का नाम पुकारा जाता है।

'मालिक ! पिछला बकाया भी चुका दें आज ?' वासिम कहता है।

'नहीं मालिक, पिछला पहले ?' वासिम फिर कहता है मालिक को चुप देगकर।

सभी मजदूर वासिम की बात का समर्थन करते हैं। मालिक का रंग से नोट निवालता हाथ वही का वही रक गया, उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं। कुछ देर पहले वासिम मालिक का अच्छा मूड हुवा हो गया है। वह आश्चर्य से मजदूरों के चेहरों का पढ़ने की कोशिश कर रहा है, मजदूरों के चेहरे तने हैं, मुट्ठिया भिची और उनकी आंखों में लाल-लाल डोर उतरते-बढ़त दिखाई दे रहे हैं।

हाजी इलाही बरश के अन्दर विचारों का ताना बाना बन बिगड़-रहा है। उसके हाथों पर एक कुटिल मुस्कान अठखेलिया करन लगती है। शायद उसने कोई हल ढूँढ लिया है, पर अबानक उनके हाथों की वह कुटिल मुस्कान न जाने कहाँ तिराहित हो जाती है।



मजदूरों के संगठित इरादे को इलाही बरकत का अनुभवी और घाघ दिमाग बहुत जल्द भाग जाता है। दूसरी खदानों पर पिछले दिना हुई हड़तालें और इबलाब जिदाबाद के नारे उनके कानों से टकराने लगते हैं। वह मन ही मन निष्पत्ति करता है। मजदूरों के अन्दर की इस आग को ज्यादा हवा देना अच्छा नहीं और वह सबसे मुन्फातिब होता है—

‘दास्तो ! कासिम ठीक कहता है। इसकी बात मुझे अच्छी लगी। हम सब बाल बच्चेदार हैं। पैसे की जरूरत सभी को रहती है। कुछ महाना से मान का पसा अटका हुआ था। अब पैसे आ गया है। बल आप सबका पिछला बकाया चुका दिया जाएगा और अब खुशखबरी और ‘अगले माह की पगार से सभी के पचास रुपये की बढ़ोतरी कर दी जाएगी।

इनाही बरकत की बात सुनकर सभी मजदूर खुशी से झूमने लगते हैं। तालिया की गडगडाहट के बीच कामिम भाई— जिदाबाद के नारे से पूरी मजान गूँज उठती है।

सभी मजदूर खुशी खुशी घर लौट रहे हैं। मजदूरों की जीत से कामिम का चेहरा भी दमक रहा है।

वह जब घर पहुँचा तो सकीना दद म छटपटा रही थी। उसकी हालत देख कर कासिम की आँखें भर आईं। सकीना को ढाटस बधाता बोला— ‘सकीना ! फिर मत कर अब तू बहुत जल्दी अच्छी हो जाएगी’।

शाम का धु धलका घरती पर अपनी चादर फलाने लगा था और दूर पश्चिम में आकाश पर दूज का चाद दिमाई दे रहा था।



## इतने सारे सुख

आनंद ! जब तुम सीढिया चढ़ते थे । तब मेरे दिल की घड़वन तेज हो जाती थी । लगता था तुम सीढियाँ नहीं चढ़ रहे, मेरे दिल में दस्तक दे रहे हो । और देगल ही देगल तुम सामने आ खड़े होते । मैं तुम्हें देख कर गुलाब के फूल की तरह मिल जाती । तुम मुझे अपनी बलिष्ठ बांहों के घेरे में कस लेते । और मैं छुई छुई सी तुम्हारे सीने से चिपक जाती और न जाने कब तक तुम्हारे शरीर की भादक गंध का अपन नथुनों से पीती रहती । फिर तुम कोने में रखी कुर्सी पर बठ जाते और मुझे पीच कर अपन पहलू में बिठा लेते । बठे बँठे घण्टों गुजर जाते पर तुम मुझे अपने से अलग नहीं करते । मैं सोचा करती काश ! प्यार के इन लमहा को एक पूरी उम्र मिल जाती ।

पर सोचने वाले की आरजुए कब पूरी होती है । एक भयंकर तूफान आया और हमारे प्यार का घामला तिनके तिनके होकर उस तूफान की भट चढ़ गया ।

आज जब इस सून कमर में बठ कर गुजरी यादों के झरोखे में भावती हूँ तो सिवाय एक बियाबान जगल के कुछ और दिखाई नहीं देता ।

तुम क्या जाना जुटाई का गम कितना ददनाक होता है । मैं अपनी कई रातों और दिन कितनी बदहवासी में गुजारी हूँ, यह मेरा दिल जानता है ।

जब तुम आते थे, तब मेरा पूरा घर खुशी से झूम उठता था। चारा और राशनी की निरग्न फल जाती थी और मैं एक अविस्मरणीय स्वर्गिक आनन्द में डूबती इतराती रहती थी।

तुम्हारे आन से पहले मरी नज़रें घड़ी के काटे पर टिकी रहती। शरीर भाग की भट्टी की तरह तपता रहता और जब तुम मुझे अपने सीने से लगा तब तब लगता मैं किसी ठण्ड पानी के झरने की गोद में बठी हूँ।

जब तुम चले जाते तब पूरा माहाल में फिर वही सूनापन समा जाता था तुम्हारे आन से पहले कमरे में तर रहा होता था।

तुम्हारे मीठिया उतरने के साथ ही मैं दूसरे दिन तुम्हारे साठने का इन्तजार शुरू कर देती थी।

वह कितने खूबसूरत और प्यार भरे दिन थे जब जिन्दगी में खुशियाँ ही खुशियाँ थी। हम खुशियाँ नहीं खुशियाँ हमारे पीछे भागती थी।

तुम्हें याद होगा जब हम सैकड़ों हज़ारा मील दूर उस पहाड़ी के शिखर पर बन मन्दिर में गये थे। और अनायास ही तुम्हारे हाथ प्रायना के लिए उठ गये थे। पता नहीं तुमने उससे क्या भागा था। पर जब तुम वहाँ से मुड़े तब तुम्हारी आँसुओं की कोर भीगी हुई थी तब मैंने महसूस था कि तुम्हारे जैसे नास्तिक के शरीर में भी एक कमजोर दिल है।

मुझे तुमसे किसी प्रमाण की जरूरत नहीं थी। क्योंकि मुझे अपने आप पर पूरा विश्वास था और मैं तुम्हें अपनी सम्पूर्ण आत्मा से प्यार करती थी। फिर तुम मुझे मुकम्मल तौर पर हासिल थे। इसलिए प्यार के जारी रहने में मुझे कहीं कोई संशय नहीं था। क्योंकि तुम मुझे हर वक्त अपनी निगाहों के दायरे में कद रखना चाहते थे। मेरा जरा भी दूर रहना तुम्हें बर्बन कर देता था और तुम्हारी हरकतों पागलपन की हद तक की लाप जाती थी।

तुम काफी सरल तथा सहृदय थे। पर तुम गुस्सिल भी थे। गुस्सा में तुम पर एना जुनून सवार होता था कि तुम अपना आपा लो बदले थे। पर इससे मुझे दुःख नहीं सुख मिलता था। मैं ऐसे मुँह के लिए बरमा से तरम गयी थी।

जब तुम्हारा गुस्सा ठण्डा पड़ता तब लगता चिलचिलाती गर्मी से झुलसते बदन को ठण्डी हवा के झोंके ने सरसा दिया है। मन हलका-टलका हो जाता और वातावरण में रात रानी की भीनी भीनी सुगंध फैल जाती।

शायद तुम्हें याद हो। जब हम एक प्रसिद्ध पबतीय स्थल पर घूमते गये थे। तब हम प्यार के सागर में बहुत गहरे तक डूब गये थे। वही तुमने होटल के कमरे में मुझे अपनी अर्द्धांगिनी बना लिया था यह तुम्हारा अपना स्वीकार था। बर्ना में तो बहुत पहले से ही तुम्हें अपना सबस्व मान चुकी थी।

मुझे वहाँ की एक घटना आज भी ज्यों की त्यों याद है। हम एक शाम सन सेट पाइंट देखने गये थे। पहाड़ी के एक ऊँचे स्थान पर अच्छा सा एक्सन्ट देख कर हम बठे थे। चारों ओर की पहाड़ियाँ पर सकड़ा लोग थे। आदमी और औरता का एक सलाब सा आ गया था जमे। अधिकतर जोड़े जवान लड़के लड़कियाँ के थे।

सब अपने आप में मगन और मस्त।

हम एक दूसरे का बाह्यपाश में जकड़े थे। और सूर्य को अस्तर्धान होते हुए देख रहे थे। लेकिन हमें पता तक नहीं चला कि कब सूर्यास्त हुआ। हमें पता तब चला जब अंधेरे ने अपनी चादर मोटी करनी शुरू की। आर आस पास से भिगुरा की आवाज ने हमारी तन्ना को तोड़ा।

चारों ओर सन्नाटे का साम्राज्य स्थापित था, पहले जो शोर गुल और भीड़-भाड़ थी वह अब समाप्त हो चुकी थी। सभी लोग जा चुके थे।

न जान धक्कत का कितना बड़ा रेला हमारे ऊपर से गुजर गया। जब हम पहाड़ी से नीचे आये। तब घोड़े वाला लम्बी इन्तजार के बाद वापस लौट रहा था। तुमने उसे आवाज दी। वह हकबका कर रुक गया तथा तुम्हारे चेहरे को तीखी निगाहों से तन्ने लगा। तुमने उससे माफी मागी और मुझे घोड़े पर चढ़ा दिया।

मैंने घोड़े पर बठ जाने के बाद तुमसे कहा था— 'बलो प्लेन पर न सही तुमने घोड़े पर तो मुझे बिठा दिया।' इस पर तुमने इठलाते हुए कहा था— 'बहुत जल्द हम प्लेन से यात्रा करके।' तुम्हारी इस बात से मेरे चेहरे पर एक साथ

हजारों फुलभडिया जगमगा उठी थी। और मेरे चेहरे पर उठी फुलभडिया की वह जगमगाहट तुम्हारी आँखा से भी नहीं बच सकी थी।

उस रात प्यार के जारी रहने के लिए तुमने न जाने किससे अनगिनत दुआए मागी थी।

लेकिन अचानक हमारी जिन्दगी में ऐसी गमगीन सुबह आई कि उस सुबह तुम मुझे अपने साथ एक तारों में बिठा कर एक दूर-दराज और अपरिचित इलाके में छोड़ आये।

काश ! हमारी जिन्दगी में वह धदसूरत सुबह कभी नहीं आती और न तुम मुझे उस अपरिचित इलाके में छोड़ आते। इससे तो अच्छा होता तुम मुझे समन्दर में डुबो देते या किसी ऊँचे पहाड़ से नीचे धकेल देते ताकि मेरी हड्डिया तब का पता नहीं चलता। और मुझे तुम्हारे विछोह की तडपन से मुक्ति मिलती।

मैं आज तक इस पहली को नहीं सुलभा सकी कि तुमने ऐसा क्या किया, पता नहीं तुम्हें इतनी जल्दबाजी क्यों थी कि तुमने अपने सारे निणय तुरत फुरत कर लिए तथा बड़ी बरहमी से मुझे अपने से अलग कर दिया। और अपने इद गिद एक ऐसी लक्ष्मण रेखा खींच दी कि मैं चाहूँ तब भी उस लाय नहीं सब।

मुझे नहीं मालूम था, कि तुम इतन कायर और डरपोक इंसान हो, जो बरसो तक साम की तरह मेरे साथ रहने के बावजूद किसी के भयाक्रान्त करने पर मुझसे विरक्त हो जाओगे, और मेरे मन की चाह तक नहीं लोंगे कि मेरे अन्दर कितना बड़ा तूफान मचल रहा है।

मैं साच भी नहीं सकती कि जिस इन्सान का मैं इतना बान्ह समझती थी। वह अन्दर से इतना लिज लिजा हागा, कि अपने सारे जजबात देखते ही देखते आग की भेंट चढा देगा।

गामद तुम साच रहे होंगे, आनद कि मैं आज भी तुम्हारे लौट आने का इन्जार् कर रही हूँ। अगर तुम ऐसा कुछ सोच रहे हो तो यह तुम्हारी ग्लमफहमी है। और यही ग्लतफहमी एक दिन तुम्हें बर्बाद कर देगी। वस तुम्हारे लौट आने का सभी वाद मुझ आज भी अच्छी तरह याद हैं। मैं तुम्हारे उन वात्ता का

चुन चुन कर यादो की गठरी में बाध लिया है। एक दिन यादो की उस गठरी को मैं किसी समन्दर में डुबा आऊँगी।

अब जब कुछ कहने ही लगी हूँ, तब सब कुछ कह ही डालू ऐसा मेरा मन कह रहा है। सुनो, तुम आकर जिस कुर्सी पर बठा करत थे, मैंने उसे हटा दिया है। कुर्सी ही क्या वह हर चीज जो तुम्हें अच्छी लगती थी, मैंने नष्ट कर दी है। और कमर को पूरी तरह बदल डाला है।

कुर्सियाँ की जगह साफ़ सेट ने ले ली है। फर्श पर दरि की जगह गलीचा बिछा दिया है। तुम जिन बतना में खाना खात थे, जिस मग में बड़े चाव से चाय पीते थे और वह प्यारा सा काच का गिलास जिसके बगैर तुम्हारे हलक में पानी नहीं उतरता था, सभी तोड़ फोड़ दिये हैं। और उनका स्थान मॉडर्न ब्राकरी ने ले लिया है।

तुम्हारी कुर्सी के सामने जहाँ टेबल पडा रहता था वहाँ अब एक खूबसूरत फ्रिज रखा है। तथा सामने वाले कोने में बेस्टन का कलड टी वी शोभायमान है। और सुना—हमारे नाम मारुति बार एलाट हो चुकी है और आनंद। तुम तो मुझे कुछ दे नहीं सके। सिवाय झूठे आश्वासना के पर उहाने गांधी नगर में जो प्लेट खरीदा है, वह मेरे नाम कर दिया है। हम बहुत जल्द उस नये प्लेट में शिफ्ट करवा दाले हैं। बोलो! तुम्हें भूल जान के लिए इतने सारे सुत क्या कम है?

अब उठती हूँ, बहुत सारे काम करने हैं, कहने के लिए मेरे पास अभी बहुत कुछ है पर तुम्हारे जैसे खुदगर्ज और गर जिम्मेदार इंसान के लिए अपने बहुमूल्य शब्दों का सजाना खच क्यों करूँ।

दिन ढलने लगा है, शाम घिर रही है, खूबसूरत और पुरबहार, मुझे नहा कर तपार हीना है, उनके आन का बकत हा गया है, वे आते ही मुझे अपनी बाहों में भर लेंगे और चुम्बनों की बौछार कर देंगे।

उनके आने के बाद हम एक पार्टी में जायेंगे, जहाँ एक रंगीन शाम अपने सम्पूर्ण जीवन के साथ हमारा इतजार कर रही होगी, तुम तो जानते हो मैं ड्रिंस नहीं करती, पर पार्टी में मैं जम कर जाम चढाऊँगी, क्योंकि आज की ऊँची सोसायटी में शराब पीना आधुनिकता का पर्याय बन गया है।

आनंद ! आज मैं बहुत खुश हूँ, मेरे पास सब कुछ है, सिर्फ तुम्हारे अलावा। मैंने ये सारे खूबसूरत सपने तुम्हारे साथ देखे थे, सपने तो पूरे हो गए, लेकिन तुम मुझसे छिन गये, और तुमने जो जखम मुझे दिये आज भी उनका दद रह रह कर टीमना रहता है, और मैं इतने सारे सुखा के बावजूद ग्यानी खाली मन लिए किसी अभिमप्ता की तरह पगलायी सी इधर-उधर भौलती फिरती हूँ।



## अलविदा जंगल

जंगल इतना खूबसूरत, दिलकश और प्यारा था कि अगर वहाँ किसी आदमी का कल भी कर दिया जाता तो उसे खुशी होती, वह कभी नाखुश नहीं होता ।

उस उम्र जंगल में रहते हुए करीब पन्द्रह साल गुजर चुके थे और बिना किसी कष्ट के चार पांच साल और गुजारे जा सकते थे, पर अचानक न जाने उसे क्या हो गया था कि वह वहाँ से भाग जाना चाहता था ।

उम्र लगन लगा था कि यदि उसने जंगल का माह नहीं त्यागा तो उसका दिमागी तबाज न बिगड़ जायगा, वह पागल हो जायगा या फिर किसी दिन ऐसा भी मुमकिन है कि उसका दम घुट जाय और वह मृत्यु का प्रास बन जाय । उसने फैसला कर लिया था कि अब जंगल को छोड़ना ही फायदेमन्द रहेगा ।

गुजिस्ता पन्द्रह बरस उसने बड़ी मस्ती और शान में गुजारे थे पर दो माह से वह कुछ उमड़ा उषड़ा रहने लगा था । इस उदामी की तट तप पहुचने के लिए उसने साग सर मारा, पर उसके हाथ कुछ नहीं लगा ।



वह अपनी मजिल से अनजान या फिर भी जगल से भाग जाना चाहता था। वह अपने पूरे परिवेश से उकता चुका था और उसकी उक्ताहट धीरे धीरे नफरत की सीमा लाघन लगी थी।

उस सब कुछ बरदाश्त के बाहर लगन लगा था। जब कोई उससे मुखातिब होता और बतियाता तो उसे लगता, मामने वाला भाले की नोक से छेद डालना चाहता है।

लागों की निगाह इतनी जहर आलूद होती थी कि उसे अपने अंदर नशतर के पवस्त हो जाने का अहसास हान लगता। थूक उसके हलक से अटक जाता। चेहरा निस्तेज और असहाय हा जाता। ऐसे वकत उसकी निगाह नीची हो जाती और वह दूसरी सिम्त की ओर चल पड़ता। तब उसे महसूस होता कि उसका पूरा शरीर बफ की सिल्ली में तबदील हो चुका है।

उसने साचा अब यहाँ से निकल भागना चाहिए।

वह उठा उठकर उसने जीरो लाइट का बत्ती जला दिया। नगे पश पर जब पाव ठिटुरन लग तब उसने चप्पलें पहिन नी फिर एक निगाह पलंग की ओर फेंकी।

उसका एक हाथ ठुड़ी के नीचे था और दूसरा गीने पर। चेहरे पर सिद्धी निगाह बाला की एक तट उसकी सूबमूरती में चार चाँद लगा रही थी, यह गहरी नींद में अतमस्तन गई पड़ी थी फिर भी उसकी मुग मुद्रा काफी आरपक लग रही थी।

उसने पलंग की छार छपन बन्म बड़ाव गाता बमत-बजन एक बार इगका चहरो ओर घूम ले। पर सब बन्म उमरे पाव रब गये। वह मुट गया और बिना उसकी छार लग लवात्रा गोपकर बाहर आ गया।

बाहर गया था उसका। और हाट क्या दन बामो तत्र ठा। उमन गन म दरे मन्तत्र का बाना म इद गि मन्तत्र और तत्र-तत्र बन्म म दन्पर का बौरता टपा दन् की छार बदन गला।

अचानक उसने दिमाग में एक विचार बौध गया कि उसने अपने भागने के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया। लोग क्या मोचेंगे कि आखिर वह गया कहाँ। सम्भव है उसके इस प्रकार गायब हो जान से बेचारा कोई बेगुनाह फिजूल में ही फस जाय।

पर जब उस याद आया कि कल ही उसने अखबारों के लिए अपनी मौत का समाचार तयार कर लिया था तो उसे सन्तुष्टि हुई। उसने अपने ओवर कोट की जेब में हाथ डालता तो वहाँ सभी लिफाफे मौजूद थे।

वह खुशी खुशी टग भरता रहा।

चौगहा आ चुका था। चौराहे पर खड़े लेम्पपोस्ट की मुर्दा रोशनी में सेटरबाक्स ऊष मा रहा था। उमने वे सारे लिफाफे उसमें डाल दिये। उसने सोचा कि कल जब लोग अचानक में पढ़ेंगे कि उसका काम तमाम हो गया है तब उन्हें बड़ी खुशी होगी।

यह सब मानकर उसने राहत की भास ली।

न जान वह नितना चला, उस कुछ याद नहीं।

मुबह हो चुकी थी। सूर्य का प्रकाश चारों ओर फैल गया था। वह कहा पहुँच गया था। उस कुछ भी मालूम नहीं था।

वह एक बियाबान में पड़ा था। आर पीछे इतिहास की शक्ति में एक खूबसूरत, दितकण आर प्यारा सा जगल छोड़ आया था।

घूप तज थी, चेहरे पर पसीना चुहचुहा आया था, उस याद आया। जब वह भागा था— तब रात थी, घना अंधेरा था और कडाके की ठण्ड। इस वक्त दिन है, चारों तरफ प्रकाश फैला है और बदन पसीने में सराबोर है। उसने सोचा कि उसने दौड़न, भागते पूरी एक मौसम गुजर चुकी है। उसे खुशी हुई कि बिना राये पिये, बिना थके हारे वह एक मासम तक जिंदा रहा है।

जगल पीछे छूट चुका था।

भव वह एक अलग ही दुनिया में आ गया था। जहाँ न शोरगुल था, न परिवार वाला की चल-चल थी, न प्रेमिका की परमाईशें। वहाँ सिर्फ ऊँचे-नीचे मैदान थे, घाटिया थी और पहाड़ थे।

रास्ते में उसे न कहीं शहर मिला, न गांव, न कोई आदमी, न आदमजाद कहीं कहीं दरख्त जरूर नजर आए पर उनके सरा पर पत्ते नहीं थे। तालाब और कुएँ भी दिखाई दिये पर उनमें पानी नहीं था।

अब वह थोड़ा असमजस में पड़ गया था कि आखिर वह कहाँ आ गया है। वह चला जा रहा है पर उसका कहीं अंत नजर नहीं आता। उजाला है पर मूस कहीं दिखाई नहीं देता आखिर माजरा क्या है।

वह एक बड़े में काले शिलाखण्ड पर बठ कर वहीं विचार कर रहा था कि एक पहाड़ी की तलहटी में उस कुछ हलचल नजर आयी।

वह पहाड़ी की ओर बढ़ चला।

उसने देखा कि असह्य स्त्री-पुरुष नग घटग अवस्था में एक धरा बना कर नाच रहे हैं नाच के साथ साथ वे अपनी माया में कुछ गा भी रहे थे।

वह पहाड़ी पर चढ़ गया और एक अच्छी सी समतल चट्टान पर बठ कर उनका नाच देखन लगा।

वह एक ऐसे स्थान पर बैठे हुआ था कि आसानी से उन्हें नाचते हुये देख सकता था। पर नाचते वाल उस नहीं देख सकता था।

नृत्य अद्विराम चल रहा था।

व स्त्री-पुरुष रात दिन नाचते रहते बिना खाद्य, बिना माय, बिना शक। इस प्रकार नाचते-नाचते कई मासमें गुजर गये। पर उनका नाच बन्द नहीं हुआ, न उनके घर थे न परिवार न वान-बच्चे। उनका न मान की चिन्ता थी और न मान की और न पहिना की। शायद उनकी जिन्दगी का अर्थ ही सिर्फ नाचना था। हा यह वान जरूर थी कि एक अद्भ्य नगाड़े की आवाज की तान पर उनके पाव उठते थे। और वे मस्ती में भूम भूम कर नाचते थे।

जब एक तरफ पहाड़ी पर बठे-बठे उस बन्द बरम बीत गया तब वह वहाँ से नीचे उतरा और नाचने वालों को निगट जा पट्टा।

वह किमी एक से कोई सवाल पूछता उससे पहले ही नगाड़े की आवाज बंद हो गयी ।

अचानक गीत के बाज चुक गये और नाच बंद हो गया ।

उसने देखा कि व असंग्य स्त्री पुरुष जा बरसा से नाच गा रहे थे एक दूसरे पर मरे पड़े है, और उनके शरीर से गाढा लाल खून निकल रहा है । खून ने घीरे-घीरे रक्त नदी का रूप धारण कर लिया है, और अब उस रक्त नदी में उनकी लाशें तैर रही ह ।

वह डर जाता है और डर के मारे उमने मुह से एक भयानक चीख निकल पडती है ।

उस लगता ह कि रक्त नदी अपने म समटन के लिए उसकी ओर तेजी से बढ रही ह । अगर वह यहा से नही भागा तो बहुत जल्दी ही उसका शिकार हो जाएगा । इस अहसास व जगते ही वह भागने के लिए अपने आपको तैयार कर लेता है और जिम आर म वह यहा आया ना उसी आर मुँह करके बेतहाशा भागने लगता है ।

वह भागता रहता ह आर पीछे मुडकर नही देखता ।

भागते भागत उसे महसूस हाता है कि वह भयानक काला जगल बहुत पीछे छूट गया है ।



## उसका सपना

कालिया मजबूत और मडियल जिस्म का मालिक था। मै जिस फक्टी म सुपरवाइजर था कालिया वहा पत्थर तोडने और तराशन का काम करता था।

वह एक भावल फक्टी थी। बहुत सार मजदूर वहा काम करत थ। विन्शी मशीन पर एक ट्राली म बडे बडे पत्थर के ब्लाक फिक्स करके चटा लिय जाते और तेज धारदार ब्लेडें पत्थर का सीना चीर कर भार पार निकन जाती।

इस इलाके म भावल का छुब भण्डार मिला था।

देखते-देखत कई छोटी बडी फक्ट्रिया इस इलाके म स्थापित हो गई थी। भार भास पास के सबडा मजदूर इन भावल फक्ट्रिया स जुड गये थे। अब महा नौ घरती साना उगलन लगी थी।

कालिया एक ऐसी ही फक्टी म मजदूर था। पक्का काला रंग, फौसादी शरीर; बडी-बडी घासें जिनम हर बस्त साल-साल डोरे फलन मिक्नुहन रहत। उसकी घागा म देगन पर लगता महा एक भाग मुह्त स जल रहीं ह और टण्डी हान का नाम नहीं ले रही।

लेकिन कालिया बड़ा व्यवहार कुशल और हसमुख व्यक्ति था। बहुत ही आहिस्ता आहिस्ता और शब्दों को तोलता हुआ बोलता। अपनी बात वह इस ढंग में कहता कि आप उनकी विनम्रता और सरलता के सामने नतमस्तक हो जाते।

उस फक्ट्री में लगभग डेढ़ सौ मजदूर काम करते थे। जो आस पास के गांवों के थे। सुबह गान, दिन भर मजदूरी करते और शाम को हसी खुशी अपने गांव घर लौट जाते। इन्हीं में कालिया भी एक था। वह रोज घर नहीं लौट सकता था। क्योंकि वहाँ बीस किलोमीटर दूर के एक पहाड़ी गांव से आया था। उसके साथ उसकी पत्नी चम्पा भी थी। कालिया ने फक्ट्री के सामने वाली पहाड़ी पर एक भोपड़ी गढ़ी कर ली थी। उसी भोपड़ी में वह चम्पा के साथ मौज मस्ती से रहता था।

लेकिन अचानक कभी कभी कालिया में परिवर्तन आ जाता उसकी बात करने की लय भंग हो जाती। उसका चेहरा तनावग्रस्त हो जाता। ऐसे समय वह सामने वाले पर आक्रमण करने की मुद्रा में होता। इस दरमियान वह कभी मेरे सामने पड़ता तो मुझे देखा प्रनदेखा कर निकल जाता या दूसरी तरफ नजर फिरा लेता।

एक दिन जब वह फक्ट्री के गहर बनी चाय की गुमटी पर बंठा सुस्ता रहा था। मैं उससे पूछा— 'कहो कालिया कसी तबीयत है?' उसने तपाक से जवाब दिया— 'क्या ठीक नहीं लगती आपका? क्या हुआ मेरी तबीयत को? मैं बहुत अच्छा हूँ साहब, बहुत अच्छा।' उसके जवाब में तलखी थी और थी गर्मागर्म प्रश्नों की बौछार।

मैं कुछ समय चुप रहा। फिर वाता— 'चेहरा आदमी के आदर का मारा भेद प्रकट कर देता है कालिया।'

उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कराहट षोड गई। उसने अपने का सयत किया और बोला— 'आप ठीक कहते हैं साहब। आप अपने आदमी हैं। आपमें क्या छिपाना।'

कुछ देर माहौल में सन्नाटा छाया रहा।

वह मन ही मन कुछ सोचता रहा। फिर उसने जो बताया उसका मांगर इस प्रकार था।

उसके बाप के पास कुल जमा दो बीघा जमीन थी। जिस पर वह फमल उगाता। पूरा परिवार उस जमीन पर आश्रित था। अचानक उसके बाप का रूपया की जरूरत हुई। वह जमीन एक जमींदार के यहाँ रहन रख दी गयी। बाप जमींदार के रुपये चुकाये बिना दुनिया में चल गया। पता नहीं उसके बाप ने जमींदार से कितना कज लिया था। अब जमींदार का कहना है कि व्याज महित कुन दा हजार रुपये की रकम बनती है। दा हजार चुके तो जमीन उमकी हो।

अब कालिया का मिफ एक ही मपना है— जमीन।

जब तक जमीन को जमींदार के चंगुल में नहीं छुड़ा जाता। तब तक वह मुग्ध की साम नहीं लेगा। यही वजह है कि कानिया अपने काम में जी ताज मेहनत करता है। महीने में बीस दिन वह श्रोवर टाइम करता है। जिस दिन वह श्रावर टाइम करता है उस दिन उसके चेहर पर अकाल का कोई चिह्न ही नहीं होता बल्कि उसके अंग अंग से उमम फूटती रहती है। शाम को जब वह श्रावर टाइम करके अपनी भोपड़ी में पहुँचता है। चम्पा उसके लिए राटिया मक रही हाती है, तब उस छोटी-सी भापड़ी में एक अनाम गंध तर रही हाती है। वह मस्ती में चम्पा को अपनी बनिष्ठ बाहा में उठाकर हवा में झुला उता है। फिर चीख कर कहता है— 'चम्पा! अब हम अपनी जमीन वापस लेंगे। तुम देखना बहुत जल्द जमीन हमारी हो जायगी। बस कुछ दिना की बात और है। फिर हम अपनी जमीन पर फमल उगायेंगे।'

और चम्पा मिमटी मिबुडी कानिया के बालकपन को अवाक् देखती सुनती रहती। तब कालिया चम्पा को सम्बोधित कर कहता— 'तुम कुछ बालती नहीं चम्पा।'

चम्पा क्या बालती बचारी गाव की गवार औरत उमकी तो समझ में कुछ नहीं आता। वह कालिया की हरकतों में कभी कभी उलझन में पड़ जाती। मन में साँचती कानिया जमीन के पीछे श्रावरा हो गया है। वहीं यह बीरा गया तो उसका क्या हागा। वह उमकी रात पर हम दती और शतना सा और कहती— 'भगवान जाने तुम रात दिन क्या सोचन रहत हो।'

दम पर कालिया कहता— 'अरे पगली! भगवान तो सब कुछ जानता है। वही तो सबका पालनहार है। काँटी को बग और हाथी को मण बही देता है। दगना एक दिन हम अपनी जमीन पर खेती करेंगे। मैं हूँ चनाऊगा और तुम मेरे लिए राटिया खर श्रायोगी फिर देगना भेत की मड पर बठ कर राटी गाने

का मजा । ठण्डी राटी और प्याज का स्वाद भी ऐसा लगेगा मानो ठाकुर जी छप्पन भाग अरोग रहे ही ।

आर चम्पा ठठा कर कालिया की बातों पर हस देती । मन में सोचती काश । रामजी कालिया की बातें सुन लें और जमीन एक बार वापस हमारी हा जाये ता मैं समझू इस जनम का मनरा ज्ञण अकारथ नहीं गया ।

एक दिन साध्या का कालिया नाचता कूदता भोपडी में आया और अपनी आदत के मुनाबिक चम्पा को परती में उठाकर हवा में भुना दिया चम्पा भीचक्की रह गयी ।

‘क्या हो गया रे कालिया ?’ उसने पूछा ।

‘कुछ नहीं ।’ कालिया न जवाब दिया ।

‘बडा खुश दिख रहा है आज ।

‘हा, बहुत खुश—बहुत खुश—आज मैं बहुत खुश हू ।’

‘ऐसी क्या बात हा गयी जो इतना खुश है रे ?’ चम्पा ने जानना चाहा ।

‘अरे मूरस अपन को मिरीमाल साहब है न । भगवान सरूप आदमी हैं । जिनके पास मैं अपन रुपय जमा किया करता था । आज वाले, कालिया तरी तपम्या पूरी हो गयी । मैं कुछ समझा नहीं । तब उनने कहा— भाई मेरे पास तेरे दा हजार रुपये जमा हो चुके है— जब तू चाह अपन रुपये मुभसे ले लेना और अपनी जमीन छुडा लेना ।

सुनकर चम्पा क चेहरे पर तलाई दौड गयी । उस लगा आज उसके चारो घाम पूर हुए ।

जब मैं सुना कि कालिया अगले हफत अपनी जमीन छुडान गाव जा रहा है । तो सुनकर बहुत अचड़ा लगा । मैं सोचा चलो इश्वर ने एक गरीब की इच्छा तो पूरी की । यर्ना ईश्वर को फुमत कहा जा गरीबो की सुन । वह तो हरदम अमीरो की ही सुनता है ।

मुझे इस बात की बहद खुशा थी कि कालिया का अपना साकार होन जा रहा था ।



लेकिन एक दिन मुह्र अचानक बिमी न दरवाजे पर दस्तक दी। मैं बाहर आया तो देखा कालिया एक कोने में गड़ा है। छूटत ही वाला— 'साहब, चम्पा बीमार है। रातभर से तड़प रही है। उसे अस्पताल ले जाना है' मैं जल्दी जल्दी कपड़े पहने और उसमें साथ चल दिया। फव्वटी व ड्राइवर को जगाकर जीप बाहर निकलवायी और चम्पा का लेकर अस्पताल पहुँच गया।

अस्पताल वृचडवान जसा था। कहने का ता यह रेफरल अस्पताल था। वहाँ राजताम्रा की जिद के कारण नव निमाग के नाम पर अनाप शनाप घन नीचे ऊपर कमरे बनाने में मच किया जा रहा था। चारों ओर दुग्घ फली हुई थी। वार्डों में काफी अफरा-तफरी मची थी। परामर्श में ही मरीज इधर उधर गिबरे पड़े थे। आन जाने वान मरीजा को नाघत फलागते एक ओर से दूसरी ओर आ जा रह थे।

मेरे परिचय के कारण जन्दी ही एक डाक्टर न चम्पा को देखा और वाड में भर्ती कर लिया। डाक्टर न एक पर्ची पर कुछ दवाय्या निष्ठी और पर्ची कालिया के हाथ में पकडा दी।

करीब एक माह तक चम्पा अस्पताल में भर्ती रही। इस बीच कभी कभार कालिया फव्वटी में नजर आ जाता बाकी दिन रात वह चम्पा की सेवा में लगा रहता। उसके जमीन छुटान के लिए इक्ठठा किय सारे रुपय चम्पा की बीमारी की भेंट चढ गये।

अब कालिया वह मजबूत और कडियल जिस्म वाला कालिया नहीं रहा था, चम्पा की बीमारी न उसे काफी कमजोर कर लिया था। बीमारी थी कि जगत की प्राण की तरह बढ़ती ही जाती थी।

और एक दिन उस बरहम बीमारो न कालिया का सबस्व भी छीन लिया।

चम्पा का दा तीन उल्टिया आयो और वह मदा के लिए सो गयी।

कालिया चीखने चिल्लाने लगा। उसन अस्पताल का सामान इधर उधर फेंक दिया। अपने कपड़े फाड डाले तथा मिर को दीवारों से टकरा टकरा कर लहू नुहान कर दिया।

बडी मुश्किल से अस्पताल में अमने ने उसे बग में किया।

चम्पा की मौत के बाद कभी कालिया दिखाई नहीं दिया ।

बाद में मुना कालिया पागल हो गया ।

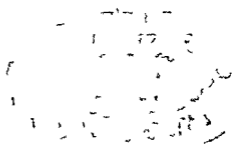
मुनवर मुझे बेहद दुःख हुआ । मुझे लगा मेरा अपना ही कोई आत्मीय मानो बिछुड़ गया हो ।

मैं कालिया में मिलने मेंटल अस्पताल गया था । मुझे देखते ही उसके मुरझाये चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान फल गयी । पर वह बोला कुछ नहीं । शरीर से वह काफी अशक्त लग रहा था । पर जब मैंने उसकी आँखों में झाँका तो मुझे वहाँ वही चिर परिचित आग जलती हुई दिखाई दी ।

जब मैं वहाँ से लौटने लगा तो उसने मेरी बांह पकड़ ली और मेरे कान में फुमफुमान लगा— 'साहब मैं जल्दी ही वापस आऊँगा । खूब मेहनत करूँगा । चम्पा तो चली गयी । पर मुझे अपना सपना पूरा करना है । मेरा यह सपना पूरा होगा तभी चम्पा की आत्मा को शान्ति मिलेगी ।

मैंने उसका कंधा थपथपाया और बाहर आ गया । बाहर सन्नाटा था । हवा खामोश और चुप । सिर्फ मेरी आँखा की कोर भीगी हुई थी ।

□



## आतंक

मर्लें बेहद तेज थी पर माहौल में बर्फानी हवाएं घुमड़ रही थी। इमारत बहुत बड़ी थी और उसका नगा फर्श बर्फ की सिल्ली की तरह सद था। फिर भी बेर सारे लाग गठरिया की तरह बेतरतीब से इधर उधर दुबक पड़े थे।

इमारत की खिडकिया खुली थी। खिडकिया के रास्ते हवा के तेज भोके के साथ लाशों की दुगध चारों ओर फल जाती और नयुना के रास्ते शरीर में प्रवेश कर जाती।

लाग चुपचाप मुदों की तरह पड़े थे। उनके जिंदा होने का अहसास सिर्फ उस वक्त होता था जब हवा का कोई बदबूदार भावा उनके नयुनों से टकराता। फिर भी उनकी जमान नहीं खुलती। उनके चेहरे पर एक विशेष प्रकार के भाव उगते, उनकी निगाह आपस में एक दूसरे से टकराती। फिर वे एक दीध निश्वास छोड़ते और पयूज होते बत्व की तरह बुझ जाते।

सब चुप थे। बूढ़े जवान और बच्चे। आश्चर्य था इस बात का था कि चौबीसों घण्ट बड़-बड़ करन वाली स्त्रिया भी चुप थी और दुध मुहें बच्चे भी। लगता था इन सबके मुह एक साथ किसी ने मिन दिया है।

कही कोई हरकत नहीं थी। पूरी इमारत में भयानक सन्नाटा पसरा पड़ा था। धीरे धीरे अंधेरा गहराने लगा। एक कोने में कुछ खुसर-फुसर हुई। एक युवक आहिस्ता से उठा और एक-एक कर इमारत की खिड़कियां बंद करने लगा। जब वह सभी खिड़कियां बंद कर चुका, तो उसने बिजली का बटन दबा दिया। बटन दबते ही जीरो घाट की मरी-मरी रोशनी चारों ओर बिखर गई।

इतने में एक बूढ़ा अपनी जगह से उठा और उसने अपने कापते हाथों से उस युवक के दोनों बाजू पकड़ लिए। फिर फुसफुसाया— 'व्या सभी को मार डालने का इरादा है। बत्ती बुझा दो, और अपनी जगह जाकर वैसे ही चुपचाप बठ जाओ।'

'ठीक है।' उस युवक ने कहा और बत्ती बुझा दी। फिर सहम कर एक ओर बठ गया। जैसे राशनी करना कोई गुनाह हो।

पूरी इमारत अंधेरे में गक हो गई थी। कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। फर्श पर किसी के बंदमा की आहट जरूर सुनाई दे रही थी। वह आहट भी एक जगह जाकर बंद हो गई। कुछ देर बाद एक खिड़की के खुलने का अहसास हुआ। फिर दूसरी, फिर तीसरी। इस तरह एक के बाद एक सभी खिड़कियां खुल गईं।

आठों देर बाद बन्दूक से गोली चलने की आवाज सुनाई दी। खिड़की के पास से एक ददनाक चीख उठी और अंधेरे को चीरती हुई उस इमारत के सीने में चाकू की तरह पवस्त हो गई।

पूरी इमारत थकवारगी जैसे हिल गई। ऐसा लगा मानो इमारत के किसी एक भाग में बम फटा हो। इमारत में पड़ी बेतरतीब गठरियां अपनी-अपनी जगह पर बापी और उस ठण्डी रात में भी उनकी पेशानी पर दहशत की वजह से पसीने की बूंदें निकल आईं।

सुबह जब सूरज निकला और उजाला फैला तो मीने देखा रात वाला दम-धोड़ सन्नाटा टूट चुका है। गठरियां हिल डुल रही हैं और इमारत में उनकी चहल-चल्नी जारी है।

कुछ लोग लिडकी के पास एक माश के इद गिद जमा' हैं और खिस विसा-कर  
 वाते कर रहे हैं। यह उसी बूढे की लाश थी जिसने रात एक युवक को बाजुआ  
 से पकड कर बत्ती बुझाने की सलाह दी थी और बत्ती बुझने के बाद खुद  
 लिडकिया खोलने लगा था और लिडकिया खोलते खोलते गोली का निशाना बन  
 गया। उसके बपड़े खून से रंग गये थे और आस-पास फर्श पर गाढा गाढा काग  
 खून जम गया था।

लोगो मे अफरा तफरी मची थी। चाय तो बहुत दूर की बात है पानी का न  
 भी बन्द था-भूख और प्यास की वजह से सब बेहाल थे। एक बीमार बूढे का  
 पूरा शरीर गदगी से लथपथ था। रात ही का उमते दम नोड दिया था। अब  
 मक्खिया उस पर भिनभिना रही थी। कल की हलाक हुई एक मा के दूध मुह  
 बच्चे ने भूख से बिलबिलाते हुए अपनी दादी की सूखी छातियों का अपने दाता  
 से कुतर डाला था और अब वहा से खून टपक रहा था। दादी बेचारी द  
 के मारे मिनकिया भर रही थी। पूरी इमारत एक नरक बाडे की तरह लग  
 रही थी।

मरे अन्दर भी भूख का ज्वालामुखी उमडने लगा। लकडी की एक मेज पर च  
 कर मैंने रोशनदान के रास्ते गली मे भाका। पूरी गली साय साय कर रही थी।  
 दूर तिराह पर एक निपाही बडूक लिए गश्त लगा रहा था।

मैं मज से उतर कर एक खम्बे के सहारे खडा हो गया। और जब से निकाल  
 कर अन्तिम सिगरेट मुलगाने लगा। धूप के बावजूद ठण्ड बढ गई थी। और  
 शरीर बफ की सिल्ली म तब्नील हान गया था। मैंने सिगरेट का एक कश  
 सीचा तो खाली पेट म एक झुरझुरी सी दौड गई। तीन-चार तेज-नेज कश  
 सीचने के बाद मुझे लगा कि ठण्ड का असर कुछ कम हुआ है।

दोपहर दो बजे क करीब किसी टक के आत और उमके हकने की आवाज सुनाई  
 दी। पर किसी ने भी लिडकी स बाह्य मुह नहीं निकाला। सभी दम साव  
 अपनी अपनी जगह चिपके रह।

भाडी देर बाद इमारत के दरवाजे पर ठण्ड ही टक टक की ध्वनी के साथ एक  
 राबीली आवाज सुनाई दी— 'दरवाजा खालो' हम तुम्हारी मदद के लिए आये  
 ह। पर वार्ड अपनी जगह स हिला तन नहीं। दो-तीन बार इसी तरह की

दरवाजा इमारत के सनाटा को तोड़ती रही। फिर भूत-प्यास से बेहाल एक मजदूर—सा आदमी बापता हुआ मेज पर चढ़ कर गली में भागने लगा। और प्रायःवस्त होकर नीचे उतर आया। लोगों से उसकी निगाह मिली और आँखों ही आँखों में इशारे ही गये।

कुछ लोग अपनी जगह पर खड़े हो गये। और कुछ अब भी गठरी बने बैठे रहे। जो आदमी मेज पर चढ़ा था, आग बढ़ा और उसने दरवाजा खोल दिया।

दरवाजा खुलते ही पुलिस की बरदी पहने एक इन्स्पेक्टरनुमा आदमी ने दरवाजा खोलने वाले आदमी का कालर पकड़ कर दा थप्पड़ जड़ दिये— 'स्तालो! दरवाजा खोलने में ही फटती है।'

थप्पड़ खाने वाला आदमी जमीन पर गिर गया। इन्स्पेक्टर ने उसे उठाने की कोशिश की तो वह फिर जमीन पर गिर पड़ा— 'अरे! स्तालो यह तो बेहोश हो गया। इन्स्पेक्टर न कहा।

इमारत में वापस सनाटा छा गया। गठरियों की पशानी पर पसीने की बून्दें चमकने लगी और बदबू के साथ साथ सम्पूर्ण बानावरण में दहशत फैल गई।

इन्स्पेक्टर ने एक बार चारों ओर नजर फेंक कर वातावरण को सूँघा। जब उसे सबकुछ ठीक ठाक लगा तो वह बोला— 'जल्दी से जल्दी यहाँ से निकलो। नीचे ट्रक खड़ा है। उसमें जाकर बठो ताकि तुम्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया जा सके।'

इन्स्पेक्टर की बात का किसी पर कोई असर नहीं हुआ।

जब एक भी आदमी अपनी जगह से नहीं हिला तो इन्स्पेक्टर फिर घुड़का— 'स्तानो! जल्दी करो, दगाई यहाँ आ पहुँचे तो तुम में से एक भी जिन्दा नहीं बचेगा।'

इन्स्पेक्टर के यह कहते ही चार निपाही भन्दर भा गये और पकड़-पकड़ कर सबको बाहर निवातों सगे।

जितना साग ट्रक में था सब उन्हें भर लिये। बाकी का इन्स्पेक्टर ने यह कहते हुए मदेश दिया— 'भाग जाओ यहाँ से, भाग जाओ और अपनी जान बचाओ।'

इन्स्पेक्टर का सकेत पाते ही ट्रक एक दिशा की ओर चल पड़ा ।

खदेडे गये लोग म, मैं भी शामिल था ।

जगह-जगह लाशें पड़ी थी । उन पर कुत्ते चिचिया रहे थे । और लाशों की दुगंध चारों ओर फली हुई थी ।

हम सब एक साथ थे । और मोच रहे थे कि कहा जायें । इतन में एक ऊँची बिल्डिंग से गालिया चलने की आवाज आई और हमारे तीन चार साथी जमीन पर गिर कर तड़पने लगे । और फिर वहीं ढेर हो गए । हम कुछ देर मक्ते की हालत में खड़े रहे । फिर जिसस जिघर बन पड़ा उधर भागने लगा ।

मैं लगातार नागते-नागते थक गया था । और हाफने लगा था । मुम्तान के लिए एक जगह रुका तो वह दिखाई दे गई । मैं फिर भागने ही वाला था कि उसकी आवाज मुनाई दी— 'डरा मत और ऊपर आ जाओ ।'

मैंने इस बार उसकी ओर देखा । वह एक युवती थी । जो अपने मकान की खिडकी में खड़ी थी और मुझसे मुखातिब थी ।

उसने अपनी बात फिर दुहराई ।

मैं काफी थक गया था । भूख और थकान से इतना अशक्त था कि अगर उस बल मुझे भी कोई गोली मार देता तो मैं उसका बड़ा आभार मानता ।

पर इस बार मेरे सामने बंदूक नहीं एक युवती थी । और वह मुझे बुला रही थी ।

जब मैं ऊपर पहुँचा तो वह बाली—

—क्या बात है, बहुत डरे हुए हो ?

—हां

—क्या ?

तुम्हें पता नहीं, बाहर में दगा हो गया है ?

हूँ तो पता है कि दगा हो गया है। पर यह पता नहीं कि दगे का कारण क्या है।'

मुझे भी नहीं मालूम।'

फिर इतने डरे हुए क्यों हो ?'

'मौत से डर नहीं डरता।'

यह मालूम है मैं यहाँ घबरेती हूँ।'

'ठीक है।'

'अगर बाँरे में तुम क्या सोचते हो ?' उसने पूछा। मैंने अब उसकी ओर ध्यान न देगा उमरी पहानी पर रिन्दी लगे थी और माँग में सिन्दूर भरा था।'

'बहिन ! तुम भी अगर मुझे मारना चाहो तो मार सकती हो, पर मैं काफी धरम हुआ और भूता हूँ।'

—सच्चा दो मिनट बसो। मैं तुम्हारे लिए माना जाती हूँ। वह रसोई में गई। फिर गाना मेज पर मजाती हुई बोनी—

—'बस ! तुम्हें बड़ी मुझ लगी है। जल्दी से गाना छोड़ यहाँ से भाग जाओ।'

मैं जल्दी जल्दी गाना गाया और उमका मुझिया घण्टा बरता हुआ मटक पर लिपट घासा। अब मेरा घट भरा था—घोर में मात का सामना हिम्मत के साथ कर लेना था।

मैं बरक का घास मुझे ही बाँग था कि मैंने जोर की आवाज सुन कर पीछे दौड़ा। और उगा मकान के सामने रुकी थी जहाँ मैं अपनी गाना गाकर बिदला था।

अब तो तुम तो उठकर और उस मकान के सामने बस लो। पर मैं उन्हें देगा कभी नहीं कि वे डरे से। मैंने भी बहुत ही गिला खुद की सुधार किया कि



अचानक बंदूक की आवाज के साथ एक ददनाक चीख मेरे कानों के पर्दे चीरती हुई न जाने कहाँ खो गई ।

मैं अपने आपको सम्भल नहीं पाया और बेहोश होकर वहीं गिर पड़ा । और जब हाथ आया तो मैं देखता । कुछ पुलिस वाले मेरी उम बहिन की ग्लून से तरबतर लाश को लारी में चढ़ा रहे हैं ।

मेरी आँखों से आसुओं की बाढ़ उमड़ पड़ी और मैं फफक फफक कर रो पड़ा ।

□

## सूरज फिर निकलेगा

रात वाली घटना से वह बेहद परेशान है। बार बार चाहने पर भी वह उस घटना को अपने मस्तिष्क से निकाल नहीं पा रहा है। जैसे अगर वह चाहे तो दोस्तों के साथ पिकनिक का प्रोग्राम बना सकता है, उस्मान के साथ बैठ कर दारू पी सकता है और एक बुद्धिजीवी की तरह आदर्श बघार कर अमीर लोगों को गाली दे सकता है, और रात वाली घटना से अपने आपको मुक्त कर सकता है।

टोकिय की आवाज में उनके विचार तबु टूट जाते हैं, वह उठकर डाक में आई सामग्री को टेबल पर रख देता है, और एक एक चिट्ठी को ध्यान से देखता है, पांच हिन्दी अंग्रेजी के साप्ताहिक अखबार, रचनाएँ भिजवाने के लिए मुफ्तखोर सम्पादका के तीन पोस्टकार्ड, एक अन्तर्देशीय पत्र उसकी एक पुरानी प्रेमिका का वह पत्र खोल कर नहीं पढ़ता। उसे मालूम है इसमें लिजलिजी भावुकता से सने कुछ शब्द और फर्माइशा के अलावा कुछ नहीं होगा।

वह रुटिन में चलते इन प्यार में अब ऊब गया है।

उसकी नजर अब घड़ी पर जा पड़ती है। दो बज रहे हैं, वह कमर के ताला लगाकर बाहर आ जाता है, गहर मडक पर पहुँचते ही ठण्डी हवा का एक भावा

उसके पूरे शरीर को स्पण कर गुजर जाता है, उम भ्रहमास होता ह कि इस बार अक्टूबर के आरम्भ मे ही सर्दी ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया ह । सत्र मार्केट को पार कर वह चाँदपोल से गुजरता हुआ पुरानी बस्ती की तरफ निकल पडता है । आगे नाला आ जाता ह, नाले के दोना ओर भोपडिया बनी हैं और गदगी या इतना डेर है कि साँस लेने पर दम घुटता ह, वह जेब से रमान निकान कर नाक पर लगा देता ह । उसके कदम अब जल्दी जल्दी उठने लगत ह ।

उस समझ म नही आ रहा है । इस गदगी के टेर मे जहा साँस लन मे भा दम घुटता ह सोग किस तरह जिन्दगी बसर कर लेत ह ।

उसे सामने बस्ती के नव धन कुबेरो द्वारा बसायी गई आगदी की ऊँची ऊँची इमारते दिग्याई दे रही ह । वह आश्चर्य चकित ह । कब जा लाग फट हाल ये किस तरह से कारा और बिरिडगा के मानिक बन गय, और नाव क घास पास बनी भापडियो के लोग हाड-तोड मेहनत के बावजूद भी गदगी और अंधरे क माभ्राज्य तने दवे रह ।

इही भोपडियो के नीच किसी एक भोपडी म सुतिया रहती थी । सुतिया जा इस गदगी बस्ती मे कमल का एक फूल थी । आज हवालात मे बद ह, रात वाली घटना का कद्र बिन्दु सुतिया ही ह । सुतिया जब नई नई इस बस्ती मे आई थी तब पूरी बस्ती म तरह तरह की चर्चाओ और अफवाहा का बाजार मम हा गया था । काई उसे आवावा व बदचलन समझता तो कोई अच्छे परिवार की महिला बताता । काई उमे परिचयता नारी बताता ता काई भगाडी स्त्री कहता । गरज य कि बस्ती मे जितने मुँह थे उतनी ही बात थी ।

इही चर्चाया क आधार पर एक दिन मेरी सुतिया से मिलन की इच्छा हा गयी थी । पाता ही बताता म बस्ती मे जन्म लेती इन अफवाहा का उमस बडे बमन स जित्र किया था । मुझे लगा इन चर्चाया स उसके मन का टेस लगी है । पर मुझे यह अहसास जरूर हुआ कि वह बडे हिम्मत वाली औरत ह तथा किसी भी कठिनाई का बडी जितेरी मे मुकाबला कर सकती है । उसन बाना ही बताता म मुझे बताया कि वह गुजरात के एक गाव की रहन वाली है । उसका आत्मी दिन भर शहर म नागी चलाता और शाम का घर ताट आता था । के गाना पनि गनी आर छाटा सा वच्चा शकर, बस यह था उनका छोटा सा परिवार । वह बडे गाराम म दिन गुजार रह थे कि एक दिन उनकी इस छागी

मी गृहस्त्री में तूफान आ गया। एक टुक दुधटना में उसके पति की टाँग टूट गयी। इस तरह यह छोटा सा परिवार अनाथ और बे-सहारा हो गया। पर सुखिया बड़े जीवट वाली औरत थी। उसने हिम्मत नहीं हारी। पति का स्थान उसने न लिया। वह दिन भर मेहनत मजदूरी करती और अपने परिवार का भरण पोषण करती। इसी तरह दिन गुजर रहे थे कि प्रवृत्ति का भयकर प्रकोप हो गया। एक दिन वह बच्चे को लेकर एक ऊँची पहाड़ी पर लकड़िया बीनने गयी थी। पीछे से अचानक नदी का बाघ टूट गया। देखते ही देखते सारा गाव पानी को भेंट चढ़ गया। इद-गिद का सारा वातावरण चीखो और चित्कारो से गूँज उठा। जो लोग वच सके वे पहाड़ियों पर चढ़ गये, शेष पानी के तत्र बहाव के साथ बह गये। उनके अपाहिज पति ने भी जल समाधी ले ली। इस तरह उसकी बची-बुची दुनिया भी लुट गयी।

जब बाढ़ का पानी कम हुआ तो सुखिया ने वह गाव छोड़ दिया और इस बस्ती में चली आई।

सुखिया की दद भरी दास्तान जान लेन के बाद वह उससे हादिक स्नेह रखने लगा था। पर उसका स्नेह फलहीन था। बजर घरती पर बीज बिखेर दन जैमा। बस्ती में सडक पर मिट्टी डालने से लेकर फमल वाटन तक वह सभी काम करने लगी थी। अब वह पूरी तरह बस्ती की हो गई थी। शुरू शुरू में उसके आने के वक्त जो अफवाहो का बाजार गम हुआ था, वह भी अब ठण्डा पड गया था। बस्ती के दूमरे लोगो की तरह सुखिया भी इज्जत की जिन्दगी जी रही थी और खुश थी।

लेकिन कुदरत को कुछ और ही मजूर था। बस्ती अकाल की चपेट में आ गयी। बस्ती में तरह-तरह की बीमारिया फलने लगी। कुए बावडिया का पानी सूख गया, ऐस में भी सुखिया हारी नहीं। वह कोई न कोई काम तलाश लेती। इस तरह वह अपने और बेटे शकर का पेट भरने का प्रयत्न करती। इस बीच वह खुद के काम से शहर चला गया था। आज सुबह जब लौटा तो बस्ती में सनाटा था। रात की घटना पूरी बस्ती की छानी में नामूर बन कर रिस रही थी। उसने रात की घटना के विषय में जो सुना वह इस प्रकार था—

अकाल के कारण बस्ती में भूखमरी फली हुई थी। वही काम घघा नहीं था। लोग बेकार थे। छाटे बच्चे रोटी रोटी चिल्लाते थे। सुखिया की दशा भी खराब हा गयी थी। इधर शकर बीमार पड गया। वह उसे लेकर डाक्टर के

पास गयी थी। ता उसने बाजार में जाने के लिये दवाइया की पर्ची बनाने। सुगिया के पास जो थोड़ी बहुत जमा पूजी थी वह सब अनाज की बेंच बंद चुका थी। कई दिनों से आटा-दाल भी सेठ की दुकान से उधार पर आ रहा था। शहर को जिन्दा रखने की इच्छा मन में लिये वह सेठ की दुकान पर रफया उधार लेने गयी।

सुगिया को अपनी दुकान की तरह आत दया ता सेठ की मिचमिची आना में चमक पदा हा गयी, वह तपाव सा बोला 'क्या चाहिये सुगिया

'मुझे रफया उधार चाहिये सेठ।' सुगिया ने कहा।

'क्या क्या करना है रफये का ?

'मेरा बच्चा बीमार है सठ, उसके लिये दवाई लानी है।'

'मो ता है पर रफया के बदल में क्या लाई हो ?'

'सेठ मेरे पास बदल में देने का कुछ नहीं है, जैसे ही रफया आयागा मैं ध्वाज सहित चुकता कर दूंगी।

'बाह जस रफया कोई बरमात का पानी है जा बरमात परसेगी और तुम मुझ लौटा दोगी।

'सेठ मुझे मालूम है रफया बरमात का पानी नहीं पर मेहनत का पसीना जटर है। मेहनत करके मैं तुम्हारी पाई पाई लौटा दूंगी।'

'अरे जा जा बड़ी आर्ट पसीना टपकाने वाली।' मैं तुम्हें खूब जानता हूँ।

'पन्द्रह दिन से आटा दाल उधारी पर जा रहा है एक पसा ता लौटाया नहीं आज तक। और रफय लौटा देगी।'

सठ तुम्हें रफया उधार दना है कि नहीं ?' सुगिया की आवाज तज थी।

'सुगिया उधार अक्कड से नहीं पिरम से मिलता है। पिरम से।' यह कह कर सेठ ली ली करके हँसन लगा था और उसकी आवा में एक विशेष प्रकार की चमक पदा हो गयी थी। सुगिया समझ गई थी कि सठ उधार दना नहीं चाहता। वह चुपचाप वहाँ से लौट पड़ी। लौटते वक्त उसके पाव भारी हो गये थे। उसे अपने आप पर बडा गुस्सा आ रहा था कि वह क्या उधार माने गयी थी।

जब वह घर पहुँची तब तक अंधेरा गहराने लगा था। उसने डिबरी जलाई।  
 किवाड़ उटका, एक और कटे हुए पेड़ की तरह एक फटी पुरानी कपड़ी पर  
 बिछ गयी।

कुछ देर सोते रहने के बाद उसे लगा कि कोई दरवाजा ठेल कर अंदर आ गया  
 है। उसने आँखें खोल कर देखा तो दरवाजे के पास एक छाया सड़ी दिखाई  
 दी। वह उठ कर सड़ी हो गयी डिबरी के उजाम में उसने देखा। सेठ दस-  
 दस के कुछ नोट मुट्ठी में नीचे उमकी और बढ रहा है और उसकी आत्मा में  
 पतान नाच रहा है।

‘सिंठ यहा क्या आए हो?’ सुखिया न बिना सहमे हुये पूछा।

‘रूपये देने।’ सेठ ने जवाब दिया।

‘दिन के उजाले में क्या साप सूँघ गया था जो अब रात के अंधेरे में आये हो?’

‘रात के अंधेरे में इसलिये आया हूँ कि बदले में तुमने कुछ वसूल कर सकूँ।’

‘सिंठ जैसे आये हा वस ही लौट जाओ वना बहुत बुरा हा जाएगा, मैं हल्का कर दूंगी  
 तां तुम पकड़े जाओगे।’

‘सुखिया, मैं दरवाजे की कुण्डी चढादी है, अंदर कोई नहीं आ सकता। और  
 अगर काई आ भी गया ता दरवाजे के बाहर खड़े मर लठत उनका काम तमाम  
 कर देंगे। फिर हल्का करने में तुम्हारी बदनामी नहीं होगी क्या?’

‘सेठ मेरी बदनामी की बात छोड अपनी खैर मना। और चुपचाप यहा से लौट  
 जा नही ता मैं तुम्हे जान से मार दूंगी।’

यह कह कर सुखिया ने उसे चले जाने का संकेत किया। पर सठ वहा से हिला  
 तक नही। उसने पूँव मार कर डिबरी बुझादी और फुर्ती से सुखिया का जा  
 दरोचा व उमे नाचने ससोटन लगा। सुखिया न सठ का एक धक्का दकर  
 जमीन पर गिरा दिया। इम बीच सुखिया न अपना सब्जी काटने वाला चाकू  
 हाथ में उठा लिया और दहाड का बोली— ‘सठ अब भी बकत है लाट जा, मेरे  
 हाथ में चाकू ह।’

सेठ बिना किसी परवाह व जिधर स आवाज आई थी, उधर बढने लगा। ज्याही  
 उसने सुखिया को अपनी बाहों में लेन की काशिश की चाकू मेंट की छाती में  
 पवस्त हो गया। एक चीख रात के सन्नाटे को चीरती हुई पूरी प्रमती का जगा  
 गई। सार मौहल्ले के लोग दक्कटठे हा गये थे। लागा न देगा दवाय्या व



## धुंध में फसे लोग

गाव की पाठशाला के मास्टर दयाराम ने जब दक्षिण पट्टी के लोगों को बताया कि सरकार ने बंधुआ मजदूरी समाप्त कर दी है और आज स कोई बंधुआ नहीं रहा, आज स सभी बंधुआ आजाद है, अब कोई किमी में जबरदस्ती काम नहीं करवा सकता, काम के बदले हर आदमी का यूनतम मजदूरी दनी जाएगी। साथ ही मास्टरजी ने यह भी बताया कि सरकार बंधुआ मजदूरी से मुक्त लोगो को छेती करने और मकान बनाने के लिए मुफ्त जमीन और रुपया भी देगी, माताजी के चींते पर बड़े लगभग सभी लोगो के चेहरा पर आश्चर्य और अविश्वास का सांभार्य छा गया। कुछ देर लोग एक दूसरे के मुंह ताकते रह। फिर आपस में खुसुर फुसुर करने लग। उह विश्वास नहीं हा रहा था कि ऐसा कसे हा सकता है।

पर कुछ बूढे लोग कह रहे थे कि जब मास्टर जी कह रहे है ता बात सच ही हागी। अगर पटवारी और तहसीलदार कहता तो बात कुछ और ही थी, पर मास्टरजी भूठ क्या बोलत लग।

मास्टर दयाराम लोगो की खुसुर फुसुर को बडे ध्यान स सुन रहे थे और उनके मनोभावा का समझ रहे थे। उहोंन अपन खादी के जकट मे से ब्रह्मवार निकाला और पूरा समाचार तागा का सुना दिया— 'मुंगम'नी न मतिमण्टल की एक



आवश्यक बठक चुनाकर बंधुआ मजदूरी का यत्न करने का निणय लिया है। यही समाचार आग के अखबार में विस्तार से छपा था। पूरा समाचार सुनने के बाद दक्षिण पट्टी के लोगो के शरीर में रक्त संचार की गति तेज हो गई। अगले सप्ते केहरा पर आश्चय और अविश्वास की जगह जग जीत लन की खुशी फली हुई थी।

दक्षिण पट्टी के आठ दस परिवार बंधुआ मजदूरी के जाग में फस हुए थे। पत्येक परिवार का एक न एक मदम्य व बंधुआ था। पर सप्स ज्यादा खुशी तुलछा की थी। क्यकि दक्षिण पट्टी का यही एक परिवार एसा था जिसके दाना के दोनो मदस्य बंधुआ थे। यानी तुलछा आर उसकी पत्नी ककू, दाना ही ठाकुर राज-सिंह व यहा व बंधुआ थ। तुलछा दौडता भागता घर पहुचा। घर का दरवाजा उडका था। पडोस की एक आरत ने बताया कि ककू पानी नने गई ह। वह हाफना कापता कुए की ओर दाड पया। पूरा रास्ता सुनसान था। उसे दूर से ही कुए पर एक आरत दियाई दी। उनन वही से ककू को जाग स पुकारा।

ककू तुलछा की आवाज सुन कर हकका चकका रह गई। वह साचने लगी। ऐसी क्या गत हो गयी कि तुलछा कुए पर दौढा आ रहा है। जहर कुछ अनथ हो गया है। वह भरा घडा सर पर रख कर तेज तेज कटमा स घर की आर चल पडी। ककू न देखा कि तुलछा दौडता भागता उसकी आर चला आ रहा है। उसके मन में हजारों तरह के खटक जनम लेने लग और उसके दिल की घडकन तेज हो गई। जब के मोना नजदीक आय ता तुलछा न पागला की तरह ककू को अपनी बाहो में भर लिया और खुशी स नाचने लगा। ककू के सर स घडा धिरकर फूट गया। मारा पानी जमीन पर बिखर गया। घडे के फूटन से उन दाना के कपडे भी गीले हो गय।

ककू तुलछा की बाहा की गिरपत में फसी थी। उसकी देह लस्त पस्त हो गई थी पर आज उसे बडा अछटा लग रहा था। हर रोज रात की जब तुलछा ठाकुर के यहा स दिन भर मेहनत करके लौटता तो आते ही कचरी पर बिछा जाता। कचरी पर दुबका पडा तुलछा उसे एक मीमने जसा दिखाई देता था। और जब कभी रात्रि के अन्तिम प्रहर तुलछा की बाह उसे अपन घेरे में ले लेती ता ककू को लगता ये बाह तुलछा की नहीं किमी बीमार आदमी की बाहें हैं। पर आज न जाने कहा ने तुलछा की बाहो में हजार बाहा का बल आ गया था।

वह मन उसे पना सुन्द लग रहा था । आज उसने पाव धरती पर नहीं, कहीं  
श्रीर पद र । । अद्ध चेतनावस्था मे भी वह सोच रही थी- काश ! पूरी  
अध तुलछा उसे अपनी बाहों मे भर कर इसी तरह नाचता रह ।

तुलछा नाचत नाचत जब थक गया ता उसने अपनी गिरपत ढीली की । अब वे  
दोनों रास्ते के किनार पडे पत्थरो के एक ढेर पर बठ गये श्रीर अपनी सासो पर  
बाबू पान की कागिज करने लगे ।

—बतू जानती ह, आज क्या हुआ ? तुलछा ने कहा ।

—क्या हुआ ?

—हम आजाद हा गय ।

—क्या कह रहा है र तुलछा ! ठीक से समझा । मेरी तो समझ मे कुछ नहीं  
आ रहा ।

—अरे पगली ! आज हम आजाद हो गय । ठाकुर की गुलामी से आजाद ।  
अब आज म न ठाकुर अपना मालिक है न हम उसके चारुर ।

—यह क्या बान रहा है रे तुलछा । आज क्या दिन मे ही दारू चढा ली तूने ।

—हा आज दिन मे ही दारू चढा ली मने अब बोल तू, क्या करना है ? तुलछा  
के स्वर मे आशा था ।

—अरे नाराज क्या होता है रे । जरा ठीक से समझा ना । मेरी तो समझ मे  
बिल्कुल ही नहीं आता ।

—अरे मूरख ! सरकार भाई बाप न बानून बनाकर हमे बंधुआ मजदूरी से  
आजाद कर लिया । मास्टर साव न अखबार मे पढ कर पूरी पट्टी के लोगा  
को सुनाया । श्रीर यह भी कहा कि सरकार हमको खेतों के लिए जमीन श्रीर  
दपया भी देगी ।

—क्या यह सच है रे तुलछा ?

—क्या ? तुम्हे बिस्वास नहीं होता ।

—बिस्वास क्यों नहीं होता रे । बिस्वास भी हाता, पर वो ठाकुर का बच्चा  
हमको बच्चा चबा जाएगा रे ।

—कैसे चबा जाएगा ? बानून हमारी रज्जा करेगा । समझी पगली ।

—पर वो बाबा न जो पाव सौ रुपिया ठाकुर से उचार लिया था, उसका क्या  
होगा ?

—बुद्ध नहीं होगा उसका । बुद्ध नहीं । सरकार ने सब बज माफ कर दिया ।  
तुलछा ने उसे आश्वस्त करन के लिए कहा ।

—पर ठाकुर मानेगा क्या ? बकू ने गवा प्रवट की ।

—अरे, ठाकुर की ऐसी की तस्ती । स्साला ! आये मेरे सामन ता काट कर  
फक दू ।

तुलछा की बात सुन कर बकू हसने लगी । बकू का हसते हुए देख कर उसका  
भी हसी फूट गई ।

जब वे घर पहुँचे ता अन्धेरा गहराने लगा था ।

बकू राटिया पकान बठ गई ।

जब वे खा चुके तो बाहर किसी न आवाज दी । तुलछा न बाहर निकल कर  
देखा ता ठाकुर का एक आदमी तेल पिलाई ताठी ब धे पर रखे खडा था ।

—क्या बात ह ? तुलछा ने पूछा ।

—ठाकुर न बुलाया ह । अभी । लठन न जबाब दिया ।

—क्या ?

—काम है ।

—म नहीं आता । कह देना ठाकुर से । अब मैं ठाकुर का गुलाम नहा । अब  
मैं आजाद हूँ । तुलछा न क्रोध से फु फकारत हुए कहा ।

तुलछा की बात सुनकर लठन की भीह तन गई । पर उमन अपने का सभालन  
हुए कहा—

—तुलछा तू आजाद हो गया ह, यह तो ठाकुर भी जानत है पर तुम्हे पिछल  
हिमात्र किताब क लिय बुलाया है ।

—कसा हिमात्र किताब । मुझ म कोई हिसाव किताब नही ठाकुर का । बोल  
दना उसको, सरकार न पिछला गारा बज माफ कर दिया ह । मास्टरजी  
अगरा म पट कर मुना रह थे ।

—ता तू मास्टरजी क चकर म ह । सीधी तरह चलता है कि लगाऊ लट्टु ?  
जबवा यह कहना था कि तुलछा न दूरी हुई दीवार से एक दू ट सीज कर दे

मारी। लठन का सर फूट गया। लाठी हाथ से छूट कर दूर जा गिरी और वह चीखता चिल्लाता उल्टे पाव ठाकुर पट्टी की ओर चल पड़ा। लठन के चले जाने के बाद तुलछा पर सकता सा तारी हो गया। उसने यह नहीं सोचा था कि आज का आज खून-खराबा हो जाएगा। लेकिन अगर वह ईंट नहीं चलाता तो लठन उम पर अवश्य वार करता। ईंट चला कर उसने अच्छा ही किया। पर उसे अब अपनी और ककू की जान खतरे में लगने लगी। उसने ककू से कहा—

—अब हमार निये यहा रहना मीत को चीता देना है।

—फिर क्या करे तुलछा।

—यहा से निकन चले।

—क्यो ?

—क्याकि यह ठाकुर अपनी नीचता से वाज नहीं आयेगा और सरकार माई-बाप तक हमारी गुहार पहुचे उसके पहले ही यह हम जान से मार डालेगा। इसलिए हम इस गाव को छोड देना चाहिये। तुलछा ने ककू को समझाया।

—अब हम जायेंगे कहा ?

—अब हम यहा से मेहर मे जायेंगे और मेहनत मजूरी करके अपना पेट भरेंगे।

थ दोना रात के अंधेरे म, आगो मे आसू लिये अपने गाव से निकल पडे।

शुबह जब गाव वाले जगे तो उन्होंने देखा कि पुलिम के सिपाही गाव मे फले हुए हैं और दक्षिण पट्टी धु ध मे डूबी हुई है। सिपाही दक्षिण पट्टी के एक एक घर की तलाशी ले रहे थे। पूरे गाव मे यह खबर आग की तरह फैल गई थी कि तुलछा ने रात मास्टर दयाराम का कत्ल कर दिया और उनका घर लूट कर भाग गया।

दक्षिण पट्टी के लोग अच्छी तरह से जानते थे कि मास्टर दयाराम का कातिल कौन है, पर वे भयाक्रान्त और मौन थे और भय के कारण पीपल के सूखे पत्ते की तरह काप रहे थे।

□

## नयी सुबह

रात के नी बजे है। अंधेरा कितना गहरा गया है। ऐसा लगता है जैसे बहुत रात हो गई। दरअसल सर्दियों की रातें होती ही ऐसी हैं। सूर्यास्त हुआ नहीं कि अंधेरा अपनी चादर फलान लगता है।

और इस धस्वे का तो यह हाल है कि आठ बजते बजते बाजार बन्द। व्यावसायिक धस्वे की यही तो समस्या है। यार दोस्त भी जल्दी-से जल्दी घर पहुंचकर अपने अपने गम बिस्तरों में दुबक जाना चाहते हैं। अब मरे जस मरने और बाहरी साग जाय-ता जायें कहा।

वस मैं अपने घर की ओर रवाना हो गया हूँ। पर साचता है इतना जल्द घर पहुंचकर भी क्या गा क्या ? आज सर्दियों बहुत तज है। लगता है मौसम की सबसे तज सर्दियों आज ही पलने वाली है। सम्भव है बर्फ भी गिरे। पुराने लाग अक्सर चना क्यों ? एक बार इतनी भयंकर बर्फ गिरी कि पूरे बम्बे में बर्फ ही-बर्फ हो गई। लाग मकानों में बंद होकर रह गए। तीन दिन बाहर रास्ता से बर्फ हटाई गई। तब जानकर वहीं आवागमन शुरू हुआ।

सर्तों से बचने के लिए मैंने मफजर को गन और मिर स बसकर बाघ लिया है और हाथों को कोट की दोना जेबा में डाल दिया है। देखता हूँ अब सर्दी मुझे तक किस रास्ते से पहुँचती है।

धीरे धीरे टहलता मैं गोल मार्केट तक आ पहुँचा हूँ। पूरे मार्केट में सन्नाटा पमरा पडा है। कहीं कोई हलचल नहीं। आज कुत्ते भी गायब है। वरना इतनी रात गये कुत्ता को सलामी दिये बिना मार्केट से गुजरना कोई आसान काम नहीं।

यहाँ से मेरा घर एक फ्लॉग द्वार है।

गोल मार्केट पहुँचने पर लगता है जैसे घर पहुँच गया। उसी तरह जिस तरह दिल्ली या जयपुर से लौटते हुए बस जैसे ही गामती चौराहा पर पहुँचती है ता लगता है— घर आ गये।

गोल मार्केट इस बस्स की शान है। कहते हैं जिसन इस गोल मार्केट का निर्माण कराया उसने देश के एक प्रसिद्ध डिजाइनर से इसका नक्शा बनवाया था।

जैसे ही मैं गोल मार्केट को पार कर अपने घर जाने वाली सड़क पर पहुँचा कि पीछे से एक आवाज आई— 'सुनिये साहब।' मैं आवाज को अनसुना कर अपनी मस्ती में चलता रहा कि इस बक्त मुझे पुकारने वाला यहाँ कौन हो सकता है। लेकिन वही आवाज मुझे काफी निकट से फिर सुनाई दी।

मैंने मुड़कर देखा तो सामने एक अपरिचित सा आदमी नमस्त की मुद्रा में खड़ा था। मैंने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। कपडा से लगा शायद कोई ड्राइवर है। मैंने उससे कहा— 'कहिये, पहचाना नहीं आपको।'

उसने एक जोरदार ठहाका लगाया फिर बोला।

'आप कैसे पहचानेंगे साहब। यह साला बक्त ही मारू है। कोई किसी को नहीं पहचानता। हर एक को अपनी पहचान बनानी पडती है। लगता है आप यहाँ नये हैं? बाकी साला पीटर को इधर कौन नहीं जानता?'

'तुमने ठीक कहा पीटर। बाकी मैं यहाँ नया हूँ' मैंने कहा।

'तब तो भजा आ गया साहब, खूब जमेगी जब मिल बैठेगी दीवान दा। चलिये, चलिये साहब होटल में बलकर बैठते हैं', उसने बड़े उत्साह में कहा।

पीटर पहले मुझे वावना या लीवाना लगा था। पर उसकी बेलास बात ने मुझे खरीक लिया। मुझे घर पहुंचन की जल्दी नहीं थी। फिर पीटर के व्यक्ति व ने मुझे काफी प्रभावित किया था। इसलिए मैं उसके साथ चल दिया। मैंने सोचा जाऊँ की यह दात किटकिटा देन वाली रात शायद पीटर के साथ गप शप में बीत जाय।

हाऊन के नाम पर पीटर मुझे जहा लेकर गया वहाँ एक ढाँचा था, जो बम्ब म बुद्धू हूरी पर बना था। रात के जाहूर कई गाँटें पड़ी थी। आर उन गाँटा पर टूँव ट्राइपर आर स्यामी पड़े गाना था रहे थे या फिर गपगामी कर रहे थे।

एक पानी गाँट दगकर हम उस पर बठ गये। यह गाँट भट्टी व तकनीक थी इसलिए शरीर का एक हल तक सर्गे स निजान मिन गयी थी।

मैं मन ही मन पीटर का प्रत्यवाद दे रहा था।

पीटर मरे काफी मना करने के बावजूद भी नहीं माना आर उसन मर गिण नी गाना मगवा दिया।

गाना था चुकन व बाए पीटर व मरी आर देना आर मगा।

उगव दात गपेँ मानिया की मानिअ दमन रह। और उसकी आगवा म एक विज्ञाप प्रचार की समन थी।

एगो समन मैं बिमो की आगवा म बरमो गाँटेनी से।

घर पीटर वाली गुण मिन ग्या था। और मुँ न राई अग्रेजी धुन बना रहा था। उगन जब मे एक विगस्ट निरासी और उमे जताकर वग गोचन गया।

मैं कहा— पीटर, घात सर्गे गहूँ तज है। घर बना जाय क्या मान पा गराय मरी ?

वग बाबा— गाँट घात नीन गरी आगवे। घात में यदून गुण है। मरी गुणी म घातने साथ मिन घातना यदून-यदून मुक्तिमा। घात ता मर विग अगन व। गव है।

‘जश्न की रात ! वह कैसे !’ मैं जानना चाहा ।

उमन भरी आखा मे झाका । जैसे कुछ पढ रहा हा । वह मुस्कराया और कहने लगा—

‘मैं धीगडा साहब के यहा डाइवर था । सप्ताह भर पहले वहा से मुझे नौदरी से निकाल दिया । धीगडा साहब बडे अच्छे आदमी थे । उन्होने मुझे कभी अनिफ से बे नही कहा । पर उनकी आलाद साली बडी फटीचर निकली साहब ! अच्छा हुआ समय रहते बेचागे चले गये वरना य उनके मु ह पर किसी दिन जरूर भाड मार देते ।’

‘लेकिन पीटर तुम्हें निकाला क्या ?’ मैंने पूछा ।

‘क्या बताऊ साहब, बहुत गडबड भाला करते थे उनके लडके । शराब, गाजा, चरस मार न जाने क्या क्या । मैंने उह ममभान की काशिश की तो उन्होने मुझे निकाल बाहर किया । मैं दस साल न उनकी गाडी चला रहा हू और एक भी छोटे न छोटा एक्सीडेंट नही किया । लेकिन अब मैं चाहता हू, इश्वर करे उनकी गाडी का एक्सीडेंट हा जाय और सब मर जायें । कम से कम धीगडा साहब की आत्मा को ना शांति मिलेगी । उनके नाम पर क्लब नही लगेगा और लागा को भी नशे न मुक्ति मिलेगी । उसने कहा और एक गहरी निश्वास छोडी ।

‘धीगडा साहब अच्छा रखत थे तुम्हें पीटर ?’ मैंने उससे पूछा ।

‘अच्छा ही नही बहुत अच्छा रखते थे धीगडा साहब मुझे ।’ कहते थे— मर पीटर, तरे भ्राने से अपना बिजनस जम गया । बहुत खुश रहत थे मुभग । शादी त्योहार पर इनाम इकराम भी देत थ । उन्होने खुश होकर मेरी पगार तीन सौ रुपये कर दी थी । बडा सस्ता जमाना था साहब । खूब मस्ती से रहता था । लेकिन अब दस रुपये रोज न गुजारा नही हाता । आप ता जानत ही हैं मस्टररोत पर काम करने वाले मजदूर को भी सरकार चौदह रुपय रोज देती ह । अच्छा हुआ उन नालायका न मुझे निकाल दिया वरना मैं खुद छोड देता एक दिन ।’

पता ही नही चला पीटर की गपगप न और काफी रात गुजर गयी । सर्दी तन हो गयी । साठे गाली हो गयी । कई टूट खाना हा चुके थे और कुछ खाना होन की तयारी न थ । हम गाट स उतरकर भट्टी के पास साफ बठ गये और गरीर भवन सगे ।



कुत्र नर माहील मे चुणो छाई रही । फिर मैंने जिज्ञासा ध्यन्त की— 'लेकिन पीटर अब क्या कराने तुम ?'

'डाइवरी करूंगा साहब, डाइवरी ! आपको यह मुनकर खुशी हागी कि मुझे आज ही अडबूक्या साहब ने अपनी नई गाडी पर डाइवर रख लिया ह । पगार भी पूरे पाच मो रुपय महीना । एडवाम भी दिया दा सो रुपया । माथ ही कहा, पीटर खुश हा ना । अगर कम हा ता मुझे वाल देना । राजा आदमी है अडबूक्या साहब, ईश्वर उवा भला करे ।'

पीटर की बात मुनकर मुझे उहद खुशी हुई और मुन्न मिला कि वह बेकार नहीं ह जसा कि मैं कुछ देर पहले उसक बारे म सोच रहा था ।

पीटर जसे नेक इंसान क लिए मेरे अन्दर एक विशेष आत्मीयता पैदा हुई । मैंने मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना की कि पीटर हमेशा खुश रह । मैंने पीटर की ओर दया तथा मुस्कराया ।

पीटर क चेहर पर एक लम्बी मुस्कान थी । उसकी आंखो म खुशी के आसू टपडवा रहे थे । दूर पूरब दिशा मे आकाश लाल हो गया था । एक खबसूरत नयी सुबह धरती पर उतरने की तैयारी कर रही थी ।



## फैसला

गाव म चहल पहन शुरू हो गयी थी ।

सवेरे का सुन मूरज पूर दिशा की बड़ी पहाड़ी की चोटी पर आ टिका था ।  
नुक्कड़ की दो चार दुकाना के माघ साय जग्गू की होटल के भी पट खुल चुके थे ।  
वैसे पी फटने के बहुत पहले ही जग्गू की होटल पर जमावडा शुरू हो जाता है, पर  
आज बहुत देर बाद जग्गू न दुकान ग्योली थी ।

निरुप की तरह जग्गू का चहरा आज खिला हुआ नहीं था । शायद रात की  
घटना का प्रभाव अभी तक उनके मन मन्दिष्क पर शेष था । फिर भी वह  
अपन ग्राहका का पूरा ध्यान रख रहा था और आन जान वाला के मवाला के  
जवाब द रहा था ।

इस बार बारिश बहुत अच्छी हुई थी । मकई की फसल पूर उठान पर थी ।  
अभी फसल के बटन म देर थी । इसतय जग्गू की होटल गाव वाला का गास  
झट्टा घनी हुई थी । इस वकन भी दम-बारह ग्राहक जमे हुए थे जिनम स साठ आठ  
दुकान म अन्दर बठे घाय मुडक रद् थे और नेप बाहर की दूटी बेंचा पर डटे थ ।  
य ताग घाय गाव पी चुके थे और अघ बठे-बठे गप्प आना कर रहे थे सा बीटी  
प कर रहे थे ।

जग्गू की यह होटल गाव की आवादी के पिछडे इलाके मे स्थित थी। जहा अधिक्तर गरीब लाग के घर थे, जिनम चमार, रेगर और बुनगर लोग रहत थे। ये सभी लाग खेतीहर मजदूर थे और ठाकुरो की भूमि पर मजदूरी करके अपना पेट पालते थे। यहां की आवादी पूरे गाव की आवादी का एक तिहाई भाग था और पिछडे लाग का यह इलाका चमार टोला के नाम से मशहूर था।

नदू बाका का इधर आत देख कर जग्गू ने छोटी केतली म पानी उबलने के लिए रखा और उसम दा चम्मच चाय और शक्कर मिलाकर बिना दूध की एक गिलास बडका चाय तयार की। नदू काका इस इलाके के मुलिया थे और पूरा चमरोटा उनका आदर करता था।

जग्गू क हाथ स चाय का गिलास थामते हुवे नदू काका ने पूछ ही लिया—  
'ब्यार जगुवा कल मध्या का बाहे का शोरगुल हुआ तर हिया' बात पूछ कर बाका ने जग्गू के चेहरे पर अपनी निगाह टिका दी।

जगुवा सुन मुन। वह कुछ बोले उमके पहने ही वाल उठा किन्ता रगर 'बाका ठाकुर रघुवीर क ताड लपाट चढ आये थे जगुवा पर और कहत रह कि सात होटल चलानी हा तो सीधी तरह चला नही ता एक दिन आग म भुवस देगे। यह सब देख सुन जगुवा का जैसे काठ मार गया। एक पाल तक नही फूटा मु ह ने, तब वाला रविया— 'बाहे हा बाजू साहज क्या घमकाय रह हा इस बचारे को। इसका दाम तो बताया? इस पर बिफर उठा था ठाकुर का बडका लाटा— 'साला अब दास भी हमी का बताना पडेगा क्या। तुम सब मानर हा। म तुम स एक एक म निपट लू गा। दिन रात इस होटल म इन्ट ठ हाकर पोनीटिककम सेलत हो और हमस पूउन हा कि दाम क्या ह।' भला बाका अब नुम्ही बनाया गया हम चाय भी नही पीये। ये ठाकुर लाग तो दार की बाले खाली कर द गार हम चाय पीन इन्टठे हा तो वह इनकू पालीटिककम लग।

कुछ धग मान रहता ह फिर इस चुप्पी को ताडता ह जग्गू का छोटा भाई रामेश्वर। जिन मात्र बात प्यार से रामेश्वर कहत ह। रामेश्वर हृष्ट पुष्ट और एक गुम्मत नवयुवक ह। वह आजराज शहर क कालज म पड रत्न ह। वह करता ह— 'बाका भइया का कमूर ही क्या ह, कम उठाने यही ता कहा या कि इस गार मरुच चमार टोले का आदमी बनना चाहिय वस, इत्तीसी बात पर

ठाकुर टोने में आया वह गया। तुम ही उतावरा काका क्या चमार टोने का आत्मी सरपंच नहीं बन सकता ?' 'क्या नहीं बन सके हरे रामभरवा। जरूर बन सकता हूँ। पर ठाकुर लोगन से पैर कौन मोल ले।' बूटे काका ने अनुभव के आधार पर कहा।

जंगू की हाटल ने आस पास काफी भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। कुछ लोग घंटे थे। कुछ मंडे थे। दा चार आरतों भी जो शायद बेता की आर जा रही थी रक कर बात चीत मुनने लग गयी थी। एक मीटिंग जसा दृश्य उपस्थित हो गया था। 'इसमें बर माल लेन की क्या बात हुआ काका।' जस्से सुधार ने बात आगे बढ़ायी— 'यह तो अपने अधिकार की बात है। कानून कहता है कि हमारे देस माय लोकतंत्र है।' हर गादमी सरपंच का वोट लेने बड़ा ही सकता है। फिर चमार टोने का आदमी सरपंच क्यों नहीं बन सकता ?

'सुम्हारी बात ठीक है। देस माय कानून है लोकतन्त्र है।' काना ने कहा— 'पर तुम नहीं जानते इस गाव तज दम का कानून नहीं पढ़ा। हिया ता अभी ठाकुरो का ही राज है। हमको उनकी मरजी के हिसाब से चरना पडता है अगर हम अपनी मरजी में चरेंगे तो वे इस गाव में हमारा रहना दुभर कर देंगे। वे कहत ह कि हमने सरपंच के चुनाव में अपना आदमी लडा लिया तो वे अपने कुआ से पानी भरना बंद कर देंगे। अब तक यही हुआ है।

'अब यह नहीं हागा काका। अगर व हम पानी नहीं भरने दोगे तो फिर इस साल फसल का बटवारा भी नहीं हागा। वे हम पानी नहीं देंगे हम उन्हें अनाज नहीं देंगे।' एक और कालेजियट लडका भीड़ में से बोन उठा।

'तुम आज कईम नहीं लगे। जमीन तो ठाकुरा की है। काका ने कहा। 'जमीन ठाकुरा की नहीं काका जमीन हमारी है। क्याकि वरमा से हम उस पर अपना खून पसीना एक करने आ रहे हूँ।' रामेसर चीख उठा। 'यह भगडा बढाने वाली बात हरे रामसर। इससे तो सगरम बडेगा। काका ने कहा।

'इस बार सरपंच हमारे टाल का आदमी बनगा काका। चाहे सपप बने या घटे।' एक साथ कई युवका की आवाजे मूज उठी। अच्छी बात है र भैया तुम लोगन ने यही साव लिया है तो ठीक ह। तुम चाहत हो कि चमार टोने के लापन की ठाकुर के आदमी लडियन में पीटें तो मैं भना गया कर सकता हूँ।' बड निगा स्वर में काका ने कहा।

'बाका लाठिया और बटूना से बाहर लोग डरते ह फिर हमारे हाथ मे कई चूडिया नही है । यह फमला तो एक दिन होना ही ह । फिर वह आज ही क्यों न हो जाय । आगिर अब तक कुछ मुट्टी भर लोग हमे लाठियो और बटूना के बल पर अपनी मर्जी के अनुसार हावने रहगे । अब हम ईंट का जवाब पत्थर से देंगे । रामेभर न दहाडते हुए कहा ।

'हा हम ईंट का जवाब पत्थर न देंगे ।' वातावरण म एक साय कई स्वर पूर पडे ।

सूरज का लाल नाल गोला आकाश क मध्य म आनर रक गया था और उनकी तेज किरणें धरती पर सीधी पड रही थी । सूर्य के तेज प्रकाश म चमार टोना के लोगो के चेहरे दमक रहे थे । उनके अंदर एक नये सकल्प के उत्साह का समंदर ठाठे मार रहा था । उधर ठाकुरो के शांत साम्राज्य मे आग लग गयी थी । ठाकुरो क हीसले पस्त थ । ठाकुर टोना ईर्ष्या और वैमनस्य की आग म जल रहा था और वहा म आग की मयानक लपटे उठ रही थी ।

□

## पुजारिन

हम तीन दिन से पचास साल की लागत से बनी एक मरवांगी इमारत में ठहरे हुए थे ।

दस बजे तक बह नहा धोकर तयार हो गयी थी । नहाने के बाद उमका रूप नियर गया था और शरीर की त्वचा में तनाव आ गया था ।

मैं उसकी आसो में भावा । मुझे उसकी नीली भील में असह्य किशिया तरती हुई दिखाई दी । चौकीदार चाय के लिए दो बार पूछ गया था पर आज दानो बार उसने मना कर दिया ।

—चाय नहीं पीनी है क्या आज ? मैंने पूछा ।

—नहीं । उसने जवाब दिया ।

—क्या ?

—तुम्हें नहीं मालूम । आज के दिन पूजा से पहले मैं अपने मुह में कुछ नहीं जानती ।

—पर आज जाल लो । मैंने उसके सामने अपना मुभाव रखा ।

—क्या ?

—इसलिए कि अब मैं इतन बड़े शहर में तुम्हारा निगम भगवान का कहां न योज कर लाऊँ ।

—तुम्हें खोजने की जरूरत नहीं है ।

—फिर क्या दिन भर भूखी ही रहोगी ।

—हां ।

—मेरे साथ यह नहीं चलेगा ।

—तुम खाना खा लेना ।

—मैंने कहा न मेरे साथ यह सब नहीं चलेगा ।

—चलेगा चलेगा और चलेगा, मुझे वे वारण उमके गार चेहर पर आग की लपटें लपलपाने लगी ।

—मेरे साथ तुम्हें यह सब छोड़ना पड़ेगा रानी ।

—सुनो अनिल । मैं सब कुछ छाड़ सकती हूँ पर अपना व्रत और पूजा-पाठ नहीं छाड़ सकती ।

—देखो, खाने पीने के मामले में जिद नहीं किया करते ।

—इसमें कौनसी जिद है ?

—क्या यह जरूरी है कि मकर में भी व्रत और पूजा पाठ किया जाये ?

—यह कौनसी किताब में लिखा है कि मकर में व्रत और पूजा पाठ बंद है ।

—तुमसे ब्रह्म पित्रु है ।

—फिर करते क्या है ।

मैं चुप लगाकर बठ गया और उसके आगे वं राधकर्म का इंतजार करने लगा ।

वह सज धज कर तैयार बठी थी फिर भी उनमें एक बार और आइने में भावा और अपने चेहरे को परखा फिर आदिन के म्बर में वाली—

—चलो, अब बाहर निकलते हैं ।

—कहा ?

—उठो तो नहीं ।

में आदेश पाकर एक मासूम बच्चे की तरह कमरे से बाहर आ गया। उसने दरजाजा बंद कर कमरे के ताला लगा दिया और चाबी को अपने पस में रख कर सट-बट सीढिया उतरने लगी।

अब हम सड़क पर थे।

उसने इधर उधर नजरें फेरी जैसे कुछ तलाश रही हो मैं उसका मतलब समझ रहा था और मन ही मन भल्ला रहा था।

उसने जाते हुए एक आदमी को रोक लिया और पूछा—

—यहां आस पास कोई मंदिर है ?

—हां है, उस आदमी ने जवाब दिया।

—कहाँ ?

—वो जो सामने लाल रंग की बिल्डिंग दिखाई दे रही है उसके पीछे एक छोटा सा मंदिर है।

—किसका है वह मंदिर ?

—यह तो पता नहीं। पर रोज में उधर से गुजरता हूँ इसलिए मुझे मालूम है। उस अपरिचित आदमी ने कहा।

—अच्छा अच्छा धन्यवाद।

धन्यवाद देने में वह काफी मुक्त हस्त है। कुछ देर वह सोचती रही फिर मुझसे वाली—

—चलो उधर चलने हैं।

—किसर ? मैं जानना चाहता।

—उस लाल बिल्डिंग के पीछे।

—जान से पायल ?

—तुम हमारा पायल और नुस्मान ही देखते रहोगे या मैं कहूंगी बसा करागै। उसके चेहरे की रंगत फिर बदलने लगी थी।

—न जाने किसका मन्दिर होगा, मैं टाउन के आदमी में कहा।

—तुम्हें उम्मत क्या ? न मही मंदिर पाया घूमना ही है जायगा।



—फिजूल धूमन मे क्या रखा है ?

—फिर तुम यही रकी, मैं ही हो आती हू । उसकी आवाज मे तल्खी थी और चेहरा गुस्से से तमतमा गया था ।

—अरे बाबा । गुस्सा क्या हाती ही, चला मे भी चलता हू । कुछ ही देर चलने के बाद मैं मंदिर हमारे सामने था । मंदिर पर दृष्टि पड़त ही उसके चेहर पर खुशी की लहर दौड गई । वही पास की दुकान से उसने एक नारियल खरीदा फिर अंगरबती की पुडिया, फिर खुश खुश मंदिर में प्रवेश किया । पूरा का पूरा नारियल चढ़ाने के बाद उसने अंगरबती जलाई और कुछ देर इधर उधर धूम फिर कर वह मंदिर का निरीक्षण करती रही, फिर बाहर आ गई ।

अब उसकी आंखों मे विजय की चमक थी और मैं अपने आपको शर्मिन्दा महसूस कर रहा था । कुछ देर हम चुपचाप चलत रहे, वह अपने आप मे इतनी मगन थी कि जिधर उमका मुह था उधर ही चली जा रही थी, बिना बोले, बिना थके । कोई और दिन रहा होता तो वह कह देती जल्दी से बाईं टेम्पो बगरा कर लो अब हमसे नहीं चला जाता । 'पर आज वह इतनी ज्यादा खुश थी माना किसी विजय अभियान से लौटी है । जब काफी वकन गुजर जान के बावजूद भी उसके मुह से कुछ नहीं फूटा तो मुझे ही बालना पडा—

—क्या हम इसी तरह चलत रहें ?

—हा आ नहीं, जस वह नीद स जगी हो ।

—फिर ?

—अब हम खाना खा ल ।

उसका यह प्रस्ताव मुझे बेगम पसंद आया । मरी आठ बजे खान की आदत है, और इस वकत दिन का एक बज रहा था । भूख और पदल चलने के कारण मेरी हालत पतली हो रही थी । वह भी इस बात को अच्छी तरह जानती थी कि मैं भूख एक मिनट भी बर्बाद नहीं कर सकता, जबकि वह तीन तीन दिन तक भूखी रह सकती है ।

हम एक होटल मे जा पहुच । वह माग पूछी की हाटन थी । दो सब्जी, गोभी मटर और बमन गट्टे । उस बमन गट्टे पसंद नहीं । मेरी तरफ वह भी खाने के मामल मे बड़ी चट्टी है । मैंने एक प्लेट ली और मगवा लिया । दही और

ध्याज तथा टमाटर उसे खान के साथ मिल जाय तो उसे ऐसा लगता है मानो स्वग मिल गया है ।

—तुम्ह ईश्वर म विश्वास है ? खाना खात-खात वह मुझमे पूछ बैठती है ।

—नहीं !

—क्या ?

—इसलिए कि मैं नहीं मानता कि ईश्वर नाम की कोई चीज भी हाती है ।

—क्यों नहीं मानत ?

—यह मेरी मर्जी ह ।

—तुमने अभी देखा नहीं कि ईश्वर भी हाता है ?

—कहाँ ?

—मन्दिर म ।

—हा मन्दिर म हा हां

—हा हा क्या । वात को हवा म मत उडाओ अनिल । तुम तो कह रहे ये न इतने बडे शहर म कहा स मैं तुम्हार लिए भगवान को खोज कर लाऊ ।

—हा, कह रहा था ।

—तुम्ह तो खोजने नहीं जाना पडा न, सडक पर आत ही भगवान मिल गए । वह चहक उठी ।

—ता मैं क्या करूँ, मैं भिडक दिया उस ।

—क्या अब भी तुम्हार मन मे ईश्वर के प्रति आस्था नहीं जगी ?

—कभी जगेगी भी नहीं ।

—क्या ?

—इसलिए कि झूठे, मक्कार और कमजार मन के लोग अपन स्वार्थों की पूर्ति के लिए ईश्वर और खुदा रूपी हथियार का इस्तमाल करते हैं ।

—यह झूठ है ।

—यह शत प्रतिशत सच है ।

—तुम्ह मालूम ह सच आर झूठ म दूध आर पानी जितना अन्तर है ।

—मुझे मालूम है ।

—क्या तुम्ह यह भी मालूम ह कि मैं तुम्ह ईश्वर की तरह पूजती हूँ । बोलते बोलते उसकी आवाज भरी गई थी और गला रुध गया था ।

—यह बात हर हिन्दुस्तानी औरत कहती है और जब तक उसे इस मृत्युनाशपूर्ण सस्कार से मुक्ति नहीं मिलती वह दुनिया के किसी भी देश की स्त्री के साथ सर उठा कर नहीं चल सकती ।

यह बात कह कर मैं उसकी ओर दंगा, लगा उसकी झील जैसी गहरी आँखों में तूफान बरपा हो गया है और उसकी धजह से कुछ आँसुदार भीती उसके लुनाईदार गालों पर बिखर गये हैं ।



## एक जीनियस का अंत

श्रीर आन गजाघर चल बसा ।

गजाघर का आप नहीं जानत । मैं भी नहीं जानता था गजाघर को लेकिन आप यह ता जानत ही हैं कि इस लम्बी चौड़ी दुनिया मे कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो एक दूसरे का आपस मे परिचय करा कर अपने बड़प्पन का अहसास कराते रहत ह ।

गजाघर की कहानी में आपको मुनाऊ इसके पीछे भी परिचय का वही सिलसिला ह । दरअसल इसका सम्पूर्ण श्रेय कमल को है । कमल गजाघर का मित्र है और मरा परिचित ।

कमल स मैं प्रतिदिन मिलता हू, फिर भी मैं उसको अपना मित्र नहीं मानता, क्योंकि अगर मैं उसका अपना मित्र मानने लगा तब मैं भी गजाघर वाली गलती दाहराऊगा । फिर कमल मेरे बार मे भी लागो को अपना शनाप बताता फिरगा । और फिर मुझ पर भी कोई कहानी लिखने बठ जाएगा ।

ऐसा नहीं है कि अपने बार मे किसी के कहानी लिखने स मैं डरता हू, बिल्कुल नहीं डरता । सन पूछें ता ऐसी कहानी लिखने मे भारी खतरा है । अक्सर

होता यह है कि ऐसी कहानियां खुद लेखक के जीवन के ईद गिद ही घूमने लगती हैं। और कहानी का असली पात्र वहीं दूर शून्य में बिनोत हो जाता है।

लेकिन फिलहाल आज गजाधर की कहानी सुनिये। मैं अपनी कहानी आपकी फिर कभी सुनाऊंगा।

जमा कि कमान न बताया—

गजाधर तीस-चालीस घरा वाले एक छोटे से गांव का गाबद लडका था। विद्यालय में उसकी स्थिति एक बुद्धू लडके जसी थी। गांव के विद्यालय की पढाई समाप्त होत होते उसके गरीब और बुद्धू माता पिता स्वयं सिधार गये थे। कॉलेज की शिक्षा उसके एक दूर के चाचा ने पूरी करवाई।

कानेज की हवा उमको बिल्कुल नहीं लगी। यहां भी वह गांव जसा ही दबू बना रहा। पर यहां एक फक जरूर आया। अपनी एकांत प्रियता के कारण वह मध्यमनशील हो गया और पूरे कानेज में वह प्रतिभावान छात्र के रूप में जाना जाने लगा।

वही कारण था कि प्रोफेसर गिडवानो ने उसे अपने प्रिय छात्रों में शामिल कर लिया। यदा कदा वह प्रोफेसर माहब के निवास पर भी आने जाने लगा। लेकिन उसके स्वभाव का दबूपन बरकरार रहा।

प्रोफेसर माहब की एक सुबमूरत लडकी थी। नाम था अमला। अमला सो दय की दवी थी। अपनी पलकों, भरा भरा बदन, वाले लम्बे बाल, हिरनी जसी आंखों और गोगी गुठान बाह जा हर वक्त किसी का ध्यान मीन से लगा लेना का आभारण दनी रती।

मत्रापर के दिन में अमला ने अपना ध्यान बना लिया था। लेकिन यहां भी उमका दबूपन मामला था लडा होता। वह अमला में मित्रता चाहता था। उमका बान करना चाहता था। पर मामला होत ही वह गण्यण जाता। और अमला दम मत्रग बगबर अपनी पढ़ाई लिगाई में लगी रहती। शायद वह किसी ऋते कम्प्युटेशन की लडारी में व्यस्त थी।

गजाधर का कानेज की पढ़ाई समाप्त हो गई थी। गमों की श्रुतियां बन रही थीं। उस रात वह गांव लौटा गया। हायला में रह कर वह अपने मित्र की

प्रतीक्षा कर रहा था। फिर वहा गाव मे उसके लिए बैठा ही कौन था। यहा कम मे कम प्रोफेसर साहब और उनकी बेटी अमला तो थे।

अब उमका ज्यादातर समय प्रोफेसर साहब के यहा गुजरता।

गजाधर मन ही मन अमला को प्यार करने लगा था। वह सोचता कोई उससे पूरी दुनिया माग ले और बदले म उसे अमला दे दे तो वह हिच-किचाएगा नहीं। पर यह सब उसके बश म कहा था। वाश ! ऐसा सम्भव होता।

नेनिन विधाता को कुछ और ही मजूर था।

गजाधर अदर ही अदर घुटता रहता। अमला से इक तरफा प्रेम मे उसके दिन का चन और राता की नीद हराम हो गई थी। उसके देखने और बात करने का अदर बदल गया था। उसके बदले व्यवहार को देख कर प्रोफेसर साहब ने उससे किसी अच्छे डॉक्टर मे कंसल्ट करने को कहा तो गजाधर ने उनके मुभाव को हसी मे उडा दिया।

अब वह इस ताक मे रहता कि अमला कही एकांत म मिले तो वह उसे अपने दिल की बात कहे।

जब ऐसा कोई सयोग नहीं बठा कि वह अमला को अपने दिल की बात बता सके, तो वह बेचन और परगान हो गया। उसकी नीद तो पहले से ही गायब थी। अब उसका खाना पीना भी छूट गया। कपडे गदे रहन लगे। चेहरे पर दाढी बढ गई। एक दिन इसी तनाव ग्रस्त स्थिति मे उसने अपने शरीर के कपडो को तार तार कर दिया।

प्रोफेसर साहब उसकी इस दुदशा से अत्यधिक दुखी थे, उ हान गजाधर को खूब ममभाने की कोशिश की, पर उनके ममभाने का कोई परिणाम नहीं निकला। बरिच दिन ब दिन गजाधर की बेहूदा हरकतो मे बढोतरी होने लगी।

प्रोफेसर साहब ने थक हार कर उसे मेटल हास्पिटल म एडमिट करा दिया। पूरे एक माह बाद गजाधर को हास्पिटल से छुट्टी मिली। उसके दूर के रिश्ते के चाचा आ गये थे। डाक्टर ने उह सलाह दी कि जितना जल्द हो सके गजाधर की शादी कर दी जाय। ताकि दूसरे अटेव मे उसे बचाया जा सके।

गजाधर अपने चाचा के साथ उनके गांव चला गया। उसका रिजल्ट आ गया था। उसने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया था। उसके चाचा ने शुभ मुद्रत देकर एक सीधी सादी लडकी से उसका व्याह कर दिया।

शादी के दसवें दिन गजाधर को नौकरी का परवाना मिला।

गजाधर की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे एक साथ इतनी खुशिया मिली कि वह मस्त हो गया तथा अपने को समार का सबसे भाग्यशाली व्यक्ति समझने लगा।

वह अपना विगत भूल चुका था। और वर्तमान से अत्यधिक प्रसन्न था। दबू और चुप्पा ता वह अब भी था मगर जा बात वह कह नहीं पाता था उस अब वह कलम से कह देता।

लाट्रे रियन की नौकरी के कारण उसे पुस्तकें पढ़ने का खर्च अवसर मिलता। दस्तान ही देगते वह एक बहुत बड़ा लेखक बन गया। उसकी लिखी कहानिया देश के प्रतिष्ठित अखबारों और पत्रिकाओं में छपने लगी। उसकी कहानिया न केवल सबलन भी आ गयी और अपने लगन के शैशव काल में ही उसे राज्य स्तरीय पुरस्कार भी मिल गया।

अब उसकी महत्वाकांक्षाएं बहुत बड़ गई थीं।

यह नाम जागन ख्याता की दुनिया में साया रहता।

अब वह स्वयं को देश का एक बहुत बड़ा साहित्यकार समझने लगा था। यहाँ तक कि उगने निराट के मित्रों में भी मिलना जुटना छोड़ दिया था।

अब यह पूरी तरह घाम कटिवा हो गया था। उस उगता उगता दृष्टिकर्षी की धीमा से आकाश हो रहा है। अभी लगता उगकी कहानी 'आदिपवन पान्थ' में आनी है। कभी दूरस्थ पर कोई शक्ति छिमा आ रही हानी ता उस आगूग होता मद् उगी की कहानी पर घनी है। यह ख्याता ही ख्याता म बन्वर्त पदुष खाता और म्पान मन तथा यागु म्प्राधाय म अगनी कहानिया पर बात बानी छिमा क बाट्टेक पर गादन कर घाता।

हर साल उसकी कहानी पर बनी कोई न कोई फ़िल्म गोडन जुबली मनाती। अब गजाधर एक काल्पनिक दुनिया में विचरण कर रहा था। जिस दुनिया में वह सबसे अधिक सम्मानित एक घनाढ्य व्यक्ति था। गजाधर का लेखन चूक गया था। उसके मस्तिष्क में उसका साथ देना बंद कर दिया। वह सिर्फ रयाली की दुनिया में खोया रहता।

अचानक एक दिन गजाधर की इस काल्पनिक दुनिया में भूचाल आ गया। जब उसने अखबार में पढ़ा कि अमला उसके शहर में क्लबटार बन कर आ गई है। उसकी विलुप्त स्मृतियां ताजा हो गईं। सोये अरमान जाग उठे।

एक दिन वह अमला में उसके निवास पर मिलने गया।

अमला के नौकर-चाकर और शाही ठाठ देख कर गजाधर दग रह गया। अमला उसे अप्रतिम सौंदर्य की स्वामिनी लगी। अमला अभी तक कुमारी थी और वह एक रुग्ण तथा मरियल पत्नी का पति और दो बच्चों का बाप।

गजाधर का सारा अहम रेत के महन की तरह ढह गया। उसका बरसा पुराना दबूपन जाग उठा। अमला के समक्ष वह अपने को अत्यधिक बीना महसूस करने लगा।

अमला से वह ज्यादा बातचीत भी नहीं कर पाया। जट्टी जट्टी चाय मुडक कर वह क्लबटार निवास से बाहर निकल आया।

पन्द्रह साल बाद वह अमला से मिला था। उसे पूरी दुनिया बदनी हुई नजर आने लगी। उसका मन उवाट हो गया। वह अपने को दुनिया का सबसे बढकिस्मत और असहाय व्यक्ति समझने लगा। अब वह अपनी बनाई काल्पनिक दुनिया के खोन में बाहर आ गया था तथा जमान की सच्चाइयों से खबर हो रहा था।

उम दुनिया अत्मजा और फिजूल लगन गयी।

गजाधर के दिन का चन और रातो की नीद फिर हराम ही गई। उसका व्यवहार बदल गया। खाना-पीना छूट गया। चेहरे पर दाढ़ी बढ गई। और वह फिर से वैतन्य हरकतें करने लगा। कई दिना से वह तनाव ग्रस्त चन रहा था।



और आज वह चल रहा ।

गजाधर के मित्र कमल न जब यह सूचना दी तब मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि यह तो होना ही था । एस जीनियस व्यक्ति जिनकी महत्वानुशा अटूट रह जाय वे या तो पागल हो जाते हैं या फिर आत्महत्या कर लेते हैं । गजाधर की यह मौत भी आत्महत्या से किसी भावने में कम नहीं थी ।

अच्छा हुआ जो गजाधर चल रहा । अगर वह निदा रहता तो उसका पागलपन हम सबका भी पागल बना देता ।







